हरिभूमि
हिसार-हांसी भूमि
रोहतक, रविवार 19 अप्रैल 2026

10 दमकल कर्मियों की हड़ताल न्याय मिलने तक...

10 नगर पालिका चुनाव के लिए भाजपा पूरी तरह तैयार...

बाड़े में लगी आग, 17 पशु झुलसे, 7 गंभीर

गुर्जर बाड़ा की घटना, पड़ोसी डॉक्टर ने कंबल ओढ़ पशुओं को निकाला बाहर, किसान ने मांगा मुआवजा

हरिभूमि न्यूज ⏭ हांसी

निकटवर्ती गांव गुर्जर बाड़ा गांव में शनिवार अलसुबह करीब अढ़ाई बजे एक किसान के घर में बने पशु बाड़े में भीषण आग लग गई। आगजनी की इस घटना में 17 पशु आग की चपेट में आ गए, जिनमें से 7 पशु गंभीर रूप से झुलस गए। आग इतनी भीषण थी कि पशु बाड़े की छत जलकर जमीन पर आ गिरी वहीं पशु बाड़े में रखा सारा सामान व पशुओं का चारा जलकर राख हो गया। सूचना मिलने पर डायल 112 और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से करीब एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद पशु बाड़े में लगी आग पर काबू पाया।

पशु बाड़े के मालिक राजेंद्र उर्फ लक्खा ने बताया की रात करीब अढ़ाई बजे उनके घर में बने पशुओं के बाड़े में आग लग गई। आग लगने घटना का पता तब चला जब पशुओं के पास लगाया गया पंखा अचानक बंद हो गया। जब हम मौके पर पहुंचे तो देखा कि पशु बाड़े में लगी आग काफी फैल चुकी थी। आग की लपटों ने बाड़े में बंधे सभी पशुओं को अपनी चपेट में ले लिया। इसके बाद उसने आस-पास के लोगों को पशुबाड़े में आग लगने की सूचना दी। आग लगने की सूचना मिलते ही पड़ोसी डॉ. संजय मौके पर पहुंचे और उन्होंने साहस दिखाते हुए कंबल ओढ़ कर जलते हुए पशु बाड़े में प्रवेश किया। उन्होंने कड़ी मशक्कत के बाद पशु बाड़े का दरवाजा खोलकर पशुओं को बाहर निकाला। राजेंद्र ने बताया कि यदि डॉ. संजय ने समय रहते जलते पशु बाड़े में घुस कर पशुओं को बाहर नहीं निकालते तो सभी पशुओं की जान जा सकती थी। पीड़ित राजेंद्र ने बताया कि उसकी सात बेटियां हैं और वह एक एकड़ जमीन पर खेती व पशु पालकर कर अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। उन्होंने बताया कि आगजनी की घटना में पशु बाड़े की छत, कुलर, वॉशिंग मशीन, आटा चक्की, गेहूं और पशुबाड़े में पशुओं के लिए रखी तुड़ी सहित घर का अन्य सामान भी जलकर नष्ट हो गया। उन्होंने बताया कि आगजनी की इस घटना से उसे करीब 5 लाख रुपये का नुकसान हो गया। उन्होंने प्रशासन से नुकसान की भरपाई के लिए आर्थिक मदद प्रदान किए जाने की गुहार लगाई है।

हांसी। पशु बाड़े में आग लगने से जला सामान व झुलसे पशुओं का उपचार करते चिकित्सक।

मकान में आग से अधिकांश सामान जला

नारनौंद। शांति अस्पताल वाली गली में एक घर में आग लग गई। इस घटना में एक परिवार का अधिकांश सामान जलकर राख हो गया, जिससे उन्हें भारी आर्थिक नुकसान हुआ है। पीड़ित परिवार की बेटी काफी लोहान ने बताया कि शनिवार शाम करीब 6:30 बजे उनके घर से अचानक धुआं उठना शुरू हुआ, जो कुछ ही देर में भयंकर आग में बदल गया। काफी लोहान के अनुसार, उनके पिता नरेश का करीब 14 साल पहले निधन हो चुका है। तब से उनकी मां खेती करके परिवार का पालन-पोषण कर रही हैं। इस आगजनी से पहले से ही आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। आग की तीव्रता इतनी अधिक थी कि कमरे के अंदर दम घुटने लगा और कोई भी अंदर जाने की हिम्मत नहीं जुटा सका। आसपास के लोगों ने तुरंत डायल 112 और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। हालांकि, तब तक घर में रखा अधिकांश सामान जल चुका था। नुकसान का सही अनुमान अभी नहीं लग पाया है। फायर ऑपरेटर सुनील के साथ रोडवेज कर्मचारी हरिओम और जगदीश ने भी आग बुझाने में सहयोग किया। पीड़ित परिवार ने प्रशासन से सहायता और मुआवजे की मांग की है।

भाईचारा व एकता बनाए रखने का आह्वान

हांसी। शहर की जाट धर्मशाला में आयोजित भाईचारा स्नेह मिलन कार्यक्रम में कैप्टन अभिमन्यु ने खाप पंचायतों व समाज के लोगों से एकता बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को नशे व अपराध से दूर रखकर सही दिशा देना जरूरी है, ताकि समाज में भाईचारा और आपसी सौहार्द मजबूत बना रहे। –विस्तृत समाचार पेज 10 पर

नशा सप्लायर सहित दो महिला आरोपी गिरफ्तार

हांसी। सीआईए-1 हांसी टीम ने नशा सप्लायर सहित दो महिलाओं को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार की गई महिलाओं की पहचान हांसी निवासी गीता व अनीता के रूप में हुई है। एएसआई प्रवीन कुमार ने बताया कि पुलिस टीम नशीले पदार्थों की रोकथाम के लिए जाट धर्मशाला चौक पर मौजूद थी कि इसी दौरान सूचना मिली कि ढाणी राजू रोड स्थित रेलवे फाटक के पास एक महिला नशीला पदार्थ गांजा बेचने की फिराक में खड़ी है। सूचना के आधार पर पुलिस ने बताए गए स्थान पर एक महिला संदिग्ध अवस्था में खड़े हुए देखा जो पुलिस वाहन को देखकर वहां से भागने लगी, लेकिन महिला पुलिस कर्मी की सहायता से उसे काबू कर उसकी तलाशी ली तो उसके पास 250 ग्राम गांजा बरामद हुआ। पूछताछ के दौरान आरोपी गीता ने नशीला पदार्थ सप्लाई करने वाली अनीता का नाम पुलिस को बताया जिसके बाद पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए नशा सप्लायर अनीता को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया जाएगा।

किशोरी से दुष्कर्म के दोषी को 20 साल कैद, 1 लाख रुपये जुर्माना

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुनील जिंदल की अदालत ने 15 साल की किशोरी के साथ दुष्कर्म करने के मामले में दोषी को 20 साल की सजा सुनाई है। इसके अलावा राहुल पर एक लाख रुपये का जुर्माना लगाया है।

अदालत में चले मामले के अनुसार इस संबंध में वर्ष 2023 में बरवाला थाना पुलिस ने पीड़िता की मां की शिकायत पर आरोपित राहुल के खिलाफ दुष्कर्म और पास्को एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। पुलिस को दी गई शिकायत में पंजाब राज्य की रहने वाली एक महिला ने बताया कि 2023 में वह 15 साल की बेटी के साथ बरवाला क्षेत्र में एक परिचित के यहां आई थी।

इसी दौरान उसी क्षेत्र में रहने वाले युवक राहुल ने बेटी को बहला-फुसला लिया और उसके साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए। किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। कुछ दिनों के बाद बेटी ने इस बारे में बताया तो बरवाला थाना पुलिस में शिकायत दी। पुलिस ने शिकायत के बाद तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपित को गिरफ्तार कर लिया था। इसी मामले में अदालत ने दोषी राहुल को 20 साल कैद व जुर्माने की सजा सुनाई है।

गुजवि प्रकरण में गिरफ्तार 6 जजपा नेताओं को जमानत

हिसार। अदालत ने गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय प्रकरण में गिरफ्तार किए गए 6 जजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं की जमानत मंजूर कर ली है। अदालत ने सभी को 30-30 हजार का बेल बॉन्ड भरने के निर्देश दिए।

दुष्यंत चौटाला व एसआई पवन कुमार ने एक-दूसरे के खिलाफ दी शिकायत

उधर, इस मामले में गिरफ्तारी देने जा रहे पूर्व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला का काफिला रोकने के मामले में विवाद बढ़ गया है। दुष्यंत चौटाला ने अर्बन एस्टेट थाने में सीआईए इंचार्ज पवन कुमार के खिलाफ शिकायत दी है वहीं पुलिस अधीक्षक के सिक्योरिटी इंचार्ज अमरजीत पर भी मिलीभगत के आरोप लगाए हैं। यही नहीं, सीआई इंचार्ज पवन कुमार ने भी अर्बन एस्टेट थाना में दुष्यंत चौटाला और उनके छोटे भाई दिग्विजय चौटाला के खिलाफ शिकायत दी है। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने इस मामले की जांच उप पुलिस अधीक्षक कवलजीत को सौंपी है।

गेहूं काटने के विवाद में युवक को अगवा कर पीटा, छह पर केस दर्ज

■ पीड़ित का आपत्तिजनक वीडियो बना वायरल करने की धमकी भी दी

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौंद

उपमंडल के एक गांव में गेहूं की कटाई को लेकर शुरू हुआ विवाद एक गंभीर आपराधिक घटना में बदल गया। रोहतक जिले के एक युवक ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके मामा ने गांव में 19 एकड़ जमीन ठेके पर ली हुई है, जिस पर वह अपने एक दोस्त के साथ खेती कर रहा था। 15 अप्रैल को जब वह कंबाइन मशीन लेकर गेहूं की फसल काटने के लिए खेत में पहुंचा, तो गांव के कुछ युवक स्कॉर्पियो गाड़ी में आए और गाली-गलौज करते हुए उसे जान से मारने की धमकी देकर वहां से भगा दिया। इस घटना के बारे में उसने अपने मामा को बताया तो उन्होंने उसे वहीं रुकने को कहा और यह भी कहा कि सुबह होते ही वह खेत में पहुंच जाएगा इस पर वह अपने अन्य साथियों के साथ वापस खेत में चला गया। पीड़ित ने बताया कि रात को करीब 12 बजे दो गाड़ियों में 10-12 युवक खेत में पहुंचे और उन्होंने उसका रास्ता रोककर मारपीट शुरू कर दी। आरोप है कि युवकों ने उसका मोबाइल छीन लिया और खेत में खड़ी गाड़ी के शीशे भी तोड़ दिए। इसके बाद चार नामजद आरोपियों भोलू, अंकित, आनंद और भोलू के छोटे भाई ने उसे जबरन गाड़ी में डालकर अगवा कर लिया और पास के एक स्थान पर ले जाकर डंडों से पीटा। शिकायत के अनुसार, बाद में हैप्पी नामक युवक को भी बुलाया गया, जिसके कहने पर पीड़ित को एक कमरे में ले जाया गया। वहां उसके साथ आपत्तिजनक हरकतें की गईं और उसकी वीडियो बना ली गई। आरोपियों ने धमकी दी कि यदि उसने किसी को घटना के बारे में बताया तो वीडियो वायरल कर देंगे। मारपीट के बाद आरोपित उसे गांव की सीमा पर छोड़कर फरार हो गए।

पुलिस ने पीड़ित के बयान पर चार नामजद सहित छह अन्य युवकों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी रमेश कुमार ने बताया कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

गिरते बाजार में धैर्य ही सबसे बड़ा हथियार

सुझाव | बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब गिरावट तेज होती है तो निवेशकों का धैर्य डगमगाने लगता है। हाल के दिनों में वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, खासकर पश्चिम एशिया में हालात और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल ने बाजार को अस्थिर बना दिया है। ऐसे माहौल में कई निवेशक घबराकर अपने निवेश से बाहर निकलने या एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) बंद करने का फैसला कर लेते हैं। हालांकि, जानकारों का कहना है कि इस तरह के फैसलों को निवेश के लिए नुकसानदेह मानती हैं। उनका स्पष्ट कहना है कि बाजार की गिरावट के समय घबराहट में लिया गया निर्णय अक्सर लंबी अवधि के रिटर्न को कमजोर कर देता है।

एसआईपी रोकना क्यों हो सकता है नुकसानदायक

गिरते बाजार में एसआईपी बंद करना निवेशकों की सबसे बड़ी भूल होती है। एसआईपी का मूल उद्देश्य ही बाजार की अस्थिरता का फायदा उठाना है। जब बाजार गिरता है, तो निवेशक कम कीमत पर अधिक यूनिट्स खरीद पाते हैं। यही प्रक्रिया "कॉस्ट एवरेजिंग" कहलाती है, जो लंबे समय में बेहतर रिटर्न देने में मदद करती है। यदि निवेशक गिरावट के समय एसआईपी रोक देते हैं, तो वे इस कॉस्ट एवरेजिंग के लाभ से वंचित हो जाते हैं। यही कारण है कि एक्सपर्ट्स हमेशा सलाह देते हैं कि एसआईपी को एक अनुशासित आदत की तरह जारी रखा जाए, न कि बाजार के मूड के हिसाब से चलाया जाए।

एकमुश्त निवेशकों के लिए एसटीपी का विकल्प

जो निवेशक एकमुश्त रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए अदिति ने एसटीपी (सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान) को बेहतर विकल्प बताया है। एसटीपी के जरिए निवेशक अपनी बड़ी राशि को धीरे-धीरे इक्विटी में ट्रांसफर कर सकते हैं। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का जोखिम कम होता है और निवेश अधिक संतुलित तरीके से होता है। यह रणनीति खासतौर पर उन निवेशकों के लिए उपयोगी है जो बाजार के सही समय को लेकर असमंजस में रहते हैं।

जियोपॉलिटिकल तनाव का असर

मौजूदा गिरावट के पीछे प्रमुख कारण वैश्विक अनिश्चितता है। पश्चिम एशिया में तनाव और तेल की कीमतों में तेजी ने निवेशकों की भावनाओं को प्रभावित किया है। हालांकि, अदिति का मानना है कि इस तरह की गिरावट आमतौर पर अल्पकालिक होती है। जब तक ये घटनाएं वैश्विक व्यापार, सप्लाई चेन या ऊर्जा आपूर्ति को बड़े स्तर पर प्रभावित नहीं करतीं, तब तक इक्विटी बाजार का दीर्घकालिक ट्रेंड नहीं बदलता। बाजार फिलहाल वास्तविक कॉर्पोरेट कमाई के बजाय खबरों और अनिश्चितता पर प्रतिक्रिया दे रहा है, जो समय के साथ सामान्य हो जाती है।

फाइनेंशियल सेक्टर में अवसर

मौजूदा परिस्थितियों में अदिति कोठारी देसाई बैंकिंग और फाइनेंशियल सेक्टर को लेकर आशावादी नजर आती हैं। उनका कहना है कि प्राइवेट बैंक, इंश्योरेंस व हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां इस समय आकर्षक वैल्युएशन पर उपलब्ध हैं। विशेष रूप से निफ्टी प्राइवेट बैंक इंडेक्स एक दशक के सबसे निचले वैल्युएशन के करीब ट्रेड कर रहा है। इसका मतलब है कि मजबूत व गुणवत्ता वाले शेयर अपेक्षाकृत सस्ते मिल रहे हैं। ऐसे समय में धैर्य रखने वाले निवेशकों के लिए सुनहरा अवसर बन सकता है।

अनुशासन व धैर्य ही सफलता

निवेश की दुनिया में सबसे बड़ा सबक यही है कि भावनाओं के बजाय रणनीति के आधार पर निर्णय लिए जाएं। बाजार का गिरना या चढ़ना एक चक्र का हिस्सा है। जो निवेशक इन उतार-चढ़ावों के दौरान भी अनुशासन बनाए रखते हैं, वही लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न हासिल करते हैं। अदिति का संदेश साफ है हेडलाइंस और शॉर्ट-टर्म मूवमेंट्स को देखकर घबराने की जरूरत नहीं है। बल्कि ऐसे समय में अपने निवेश प्लान पर टिके रहना ही समझदारी है।

लॉन्ग टर्म निवेशकों के लिए मौका

इतिहास गवाह है कि बाजार में हर बड़ी गिरावट के बाद रिकवरी भी आती है। जो निवेशक गिरावट के समय निवेश जारी रखते हैं, वे रिकवरी के समय सबसे अधिक लाभ कमाते हैं। इसलिए, मौजूदा बाजार की अस्थिरता को खतरे के बजाय अवसर के रूप में देखना चाहिए।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- इक्विटी, डेट और गोल्ड के सही संतुलन से बनाएं सुरक्षित और ग्रोथ-ओरिएंटेड पोर्टफोलियो
- सफल निवेश के लिए अपनाएं बैलेंस, डिसिप्लिन और सही एसेट एलोकेशन

एसेट एलोकेशन, एसआईपी और लिक्विडिटी प्लानिंग से पाएं स्थिर रिटर्न, रिटर्न के पीछे भागने के बजाय अपनाएं संतुलित और अनुशासित निवेश रणनीति

उतार-चढ़ाव भरे बाजार में समझदारी से करें निवेश

वित्त वर्ष 27 ऐसा वर्ष हो सकता है जहां बाजार निवेशकों की समझ और धैर्य की परीक्षा लेगा। यह समय आक्रामक या बिना योजना वाले निवेश का नहीं है। जो निवेशक संतुलन, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान देंगे, वही लंबी अवधि में सफल होंगे।

नया वित्तीय वर्ष ऐसे समय में शुरू हो रहा है जब बाजार लिक्विडिटी-ड्रिवन तेजी के दौर से निकलकर एक अधिक चुनिंदा और उतार-चढ़ाव भरे फेज में प्रवेश कर चुका है। पिछले कुछ वर्षों में इक्विटी बाजार ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिए, लेकिन वित्त वर्ष 27 का परिदृश्य अलग नजर आ रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी भी असमान गति से बढ़ रही है, महंगाई में कमी आई है लेकिन यह पूरी तरह नियंत्रित नहीं हुई है, और ब्याज दरों में तेजी से गिरावट की संभावना भी कम है। ऐसे माहौल में भारतीय निवेशकों के सामने अवसर तो हैं, लेकिन सफलता के लिए रणनीति में बदलाव जरूरी है। यह समय अंधाधुंध रिटर्न के पीछे भागने का नहीं, बल्कि सोच-समझकर, संतुलित और अनुशासित निवेश करने का है।

इस साल अपनाए जाने वाले 7 अहम निवेश मंत्र

1. अपने वित्तीय लक्ष्यों की दोबारा समीक्षा करें

अक्सर निवेशक एक बार लक्ष्य तय कर लेते हैं और फिर उसे बदलते नहीं, जबकि समय के साथ परिस्थितियां बदलती रहती हैं। आय, जिम्मेदारियां और बाजार की स्थिति इन सबका असर निवेश पर पड़ता है। अगर आपका कोई लक्ष्य 2–3 साल में पूरा होना है, तो ज्यादा इक्विटी निवेश जोखिम भरा हो सकता है। वहीं, लंबी अवधि के लक्ष्यों जैसे रिटायरमेंट या वेल्थ क्रिएशन के लिए इक्विटी अब भी उपयुक्त विकल्प है। इसलिए निवेश का ढांचा लक्ष्य की समयसीमा के अनुसार तय करना जरूरी है।

2. एसेट एलोकेशन को संतुलित रखें

आज के समय में सबसे बड़ा जोखिम बाजार का उतार-चढ़ाव नहीं, बल्कि एक ही एसेट क्लास में अत्यधिक निवेश है। कई पोर्टफोलियो अनजाने में इक्विटी-हैवी हो गए हैं। वित्त वर्ष 27 में संतुलन बेहद जरूरी है। इक्विटी के साथ-साथ डेट और गोल्ड को भी पोर्टफोलियो में शामिल करें। जहां इक्विटी ग्रोथ देती है, वहीं डेट स्थिरता प्रदान करता है और गोल्ड अनिश्चितता के समय सुरक्षा कवच का काम करता है। साल में कम से कम एक बार पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करना जरूरी है।

3. सही मायनों में डाइवर्सिफिकेशन अपनाएं

कई निवेशक मानते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड रखना ही डाइवर्सिफिकेशन है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर सभी फंड एक ही तरह के सेक्टर या मार्केट कैप में निवेश कर रहे हैं, तो जोखिम बना रहता है। बेहतर होगा कि पोर्टफोलियो में लार्ज कैप, फ्लेक्सी कैप, डेट और गोल्ड का संतुलित मिश्रण हो। इसके अलावा सीमित स्तर पर अंतरराष्ट्रीय निवेश भी जोड़ा जा सकता है, जिससे जोखिम और रिटर्न का संतुलन बेहतर होता है।

4. वोलाटिलिटी को अवसर के रूप में देखें

वित्त वर्ष 27 में बाजार में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है। ऐसे में घबराने की बजाय इसे अवसर के रूप में देखना चाहिए। एसआईपी इस तरह के माहौल में बेहद प्रभावी साबित होती है, क्योंकि यह लागत को औसत करती है। इसके साथ ही, बाजार में गिरावट आने पर अतिरिक्त निवेश (स्टैगर्ड तरीके से) करना लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न दे सकता है। सबसे जरूरी है कि भावनाओं के बजाय अनुशासन के साथ निवेश जारी रखा जाए।

5. लिक्विडिटी को नजरअंदाज न करें

कई निवेशक अपनी अधिकांश राशि बाजार से जुड़े साधनों में लगा देते हैं और जरूरत पड़ने पर नुकसान में निवेश तोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इससे बचने के लिए कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड जरूर रखें। यह फंड न केवल आपको संकट में सुरक्षा देगा, बल्कि बाजार में अवसर आने पर अतिरिक्त निवेश की सुविधा भी देगा।

6. डेट निवेश की अहमियत समझें

तेजी के दौर में डेट निवेश को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन अस्थिर बाजार में इसकी भूमिका बढ़ जाती है। डेट इंस्ट्रूमेंट्स स्थिर और अनुमानित रिटर्न देते हैं, साथ ही पोर्टफोलियो के कुल जोखिम को कम करते हैं। खासकर शॉर्ट-टू-मिड टर्म लक्ष्यों के लिए डेट एक मजबूत विकल्प है। यह पोर्टफोलियो को संतुलन और स्थिरता प्रदान करता है।

7. फंड चयन से ज्यादा जरूरी है अनुशासन

निवेशक अक्सर "सबसे अच्छा फंड" ढूंढ़ने में समय लगाते हैं, लेकिन असल में लंबे समय में सफलता अनुशासन और निरंतरता से मिलती है। बार-बार फंड बदलना नुकसानदायक हो सकता है, क्योंकि इससे अक्सर निवेशक ऊंचे दाम पर खरीदते और गिरावट में बेचते हैं। बेहतर है कि कुछ अच्छे फंड चुनकर लंबे समय तक निवेशित रहें और समय-समय पर समीक्षा करते रहें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

वित्त वर्ष 27 ऐसा वर्ष हो सकता है जहां बाजार निवेशकों की समझ और धैर्य की परीक्षा लेगा। यह समय आक्रामक या बिना योजना वाले निवेश का नहीं है। जो निवेशक संतुलन, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान देंगे, वही लंबी अवधि में सफल होंगे। बाजार को समय करने की कोशिश करने के बजाय ऐसा पोर्टफोलियो बनाना ज्यादा समझदारी है, जो हर परिस्थिति में टिक सके। अंततः, निवेश में सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे सही निर्णयों को लगातार लागू करने से मिलती है। समझदारी से निवेश करें और अपने वित्तीय भविष्य को मजबूत बनाएं।

10,000 की एसआईपी या 10 लाख का लंपसम कौन देगा बड़ा रिटर्न

दुनिया में बाजार कभी सीधी रेखा में नहीं चलता, उतार-चढ़ाव, गिरावट, रिकवरी और अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है

जानकारी | बिजनेस डेस्क

आज के अस्थिर और उतार-चढ़ाव भरे बाजार में म्यूचुअल फंड निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर एसआईपी बेहतर है या लंपसम निवेश। खासकर तब, जब अचानक आपके हाथ में 10 लाख रुपये की बड़ी राशि आ जाए चाहे वह बोनस हो, बचत हो या किसी निवेश का रिटर्न। एक तरफ एसआईपी का अनुशासित और अपेक्षाकृत सुरक्षित तरीका है, जिसमें बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है, वहीं दूसरी ओर लंपसम निवेश है, जो सही समय पर किया जाए तो तेज कंपाउंडिंग के जरिए बड़ा रिटर्न दे सकता है। लेकिन जब बाजार गिरता है, पोर्टफोलियो लाल दिखता है और निवेशक घबराने लगते हैं, तब यह दुविधा और भी गहरी हो जाती है कि निवेश जारी रखें या रणनीति बदलें। ऐसे में 10 साल की अवधि में कौन-सा तरीका ज्यादा संपत्ति बनाता है। यही सवाल हर निवेशक के मन में उठता है।

पहली नजर में लंपसम निवेश ज्यादा आकर्षक लगता है। इसका कारण है कंपाउंडिंग की ताकत। जब पूरी राशि एक ही बार में निवेश हो जाती है, तो वह पहले दिन से ही बाजार में काम करना शुरू कर देती है। यदि हम 10 साल की अवधि और औसतन 12% सालाना रिटर्न मानें, तो 10 लाख का लंपसम निवेश लगभग 31 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। इसके मुकाबले 10,000 की मासिक एसआईपी, जिसमें कुल निवेश 12 लाख रुपये होता है, लगभग 22.5 लाख रुपये का फंड तैयार करती है। इस सीधी तुलना में लंपसम स्पष्ट रूप से आगे दिखाई देता है।

"आज के समय में, जब वैश्विक और घरेलू कारकों के कारण बाजार में अस्थिरता बढ़ी हुई है, यह संतुलित रणनीति और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह निवेशक को न केवल बेहतर रिटर्न की संभावना देती है, बल्कि मानसिक संतुलन भी बनाए रखने में मदद करती है। निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसे निर्णय लेना भी है, जिन्हें लंबे समय तक सहजता से निभाया जा सके।

निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं

निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं है। असल दुनिया में बाजार कभी सीधी रेखा में नहीं चलता। इसमें उतार-चढ़ाव, गिरावट, रिकवरी और अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है। यही वह जगह है, जहां एसआईपी की अहमियत समझ में आती है। एसआईपी निवेशक को बाजार की टाइमिंग की चिंता से मुक्त करती है। वह हर महीने एक तय राशि निवेश करता है। चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। इसका सबसे बड़ा फायदा "रुपी कॉस्ट एवरेजिंग" के रूप में मिलता है, जहां निवेशक महंगे और सस्ते दोनों दामों पर यूनिट खरीदता है, जिससे उसकी औसत लागत संतुलित रहती है।

एसआईपी की ताकत और स्पष्ट

जब बाजार गिरता है, तब एसआईपी की ताकत और स्पष्ट हो जाती है। उस समय अधिकांश निवेशक घबराकर निवेश रोक देते हैं, लेकिन जो निवेशक एसआईपी जारी रखते हैं, वे कम कीमत पर ज्यादा यूनिट खरीदते हैं। यही यूनिट्स बाजार के संभलने पर बेहतर रिटर्न देती हैं। इसके विपरीत, लंपसम निवेश में यदि निवेश गलत समय पर यानी बाजार के उच्च स्तर पर किया गया हो, तो शुरुआती गिरावट निवेशक को मानसिक दबाव में ला सकती है। कई बार निवेशक घबराकर नुकसान में ही पैसा निकाल लेते हैं, जिससे दीर्घकालिक लाभ का अवसर खत्म हो जाता है।

सही उत्पाद चुनना जरूरी

यहां एक महत्वपूर्ण पहलू 'निवेशक का व्यवहार' है। निवेश में सफलता सही उत्पाद चुनने से नहीं, बल्कि सही व्यवहार बनाए रखने से मिलती है। बाजार की गिरावट, नकारात्मक खबरें और लाल होते पोर्टफोलियो निवेशकों के धैर्य की परीक्षा लेते हैं। एसआईपी एक अनुशासित ढांचा प्रदान करती है, जो निवेशक को नियमित बने रहने में मदद करता है। वहीं लंपसम निवेश में निर्णय का पूरा भार एक ही समय पर होता है, जो मानसिक रूप से अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि लंपसम निवेश गलत है। यदि बाजार का मूल्यांकन आकर्षक हो, निवेशक के पास लंबी अवधि का नजरिया हो और वह उतार-चढ़ाव सहने की क्षमता रखता हो, तो लंपसम रणनीति अत्यंत प्रभावी हो सकती है। जब बाजार लगातार ऊपर बढ़ रहा हो, लंपसम निवेश अधिक लाभ देता है क्योंकि पूरा पैसा शुरू से ही कंपाउंडिंग का लाभ उठा रहा होता है।

कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं

अंततः, एसआईपी और लंपसम में से कौन बेहतर है, इसका कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं है। यह पूरी तरह निवेशक की जोखिम लेने की क्षमता, निवेश अवधि और व्यक्तिगत सुविधा पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण यह है कि निवेशक अपनी रणनीति को समझे, बाजार की अस्थिरता से विचलित न हो और अनुशासन बनाए रखे।

15 लाख से ज्यादा सैलरी पर भी जीरो टैक्स का मौका

बिजनेस डेस्क

मिडिल क्लास के लिए टैक्स बचाना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रहा है। हर साल बढ़ती सैलरी के साथ टैक्स का बोझ भी बढ़ता जाता है, जिससे हाथ में आने वाली आय सीमित रह जाती है। लेकिन वित्त वर्ष 2026-27 के नए टैक्स नियमों ने इस धारणा को बदलने का मौका दिया है। अब सही प्लानिंग और कुछ स्मार्ट विकल्पों के जरिए 15 लाख रुपये से अधिक सैलरी वाले लोग भी अपना टैक्स पूरी तरह शून्य कर सकते हैं। सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम ने कई ऐसे प्रावधान दिए हैं, जो पहली नजर में छोटे लगते हैं, लेकिन मिलकर बड़ा फायदा देते हैं। खासतौर पर मील वाउचर्स, स्टैंडर्ड डिडक्शन और एम्प्लॉयर के जरिए किए गए निवेश इस गणित को पूरी तरह बदल देते हैं।

मील वाउचर्स बने गेम चेंजर

नए टैक्स नियमों में मील वाउचर्स को एक बड़ा फायदा माना जा रहा है। सेक्शन 115बीएसी के तहत प्रति भोजन 200 रुपये तक के वाउचर्स को टैक्स फ्री कर दिया है। अगर आपकी कंपनी आपको रोजाना लंच और डिनर के लिए 400 के वाउचर देती है, तो महीने के लगभग 22 कार्य दिवसों में यह राशि 8,800 हो जाती है। सालभर में यही रकम 1,05,600 रुपये तक पहुंच जाती है। यह राशि सीधे आपकी ग्रॉस सैलरी से घट जाती है, जिससे आपकी टैक्सेबल इनकम कम हो जाती है। यानी छोटे-छोटे खर्चों को स्मार्ट तरीके से बड़ा टैक्स बचा सकते हैं।

3.86 लाख की कुल छूट कैसे बनती है

- आपकी कुल सीटीसी 15.85 लाख रुपये है, तो आप चार प्रमुख तरीकों से अपनी टैक्सेबल इनकम को काफी हद तक घटा सकते हैं। पहले आता है स्टैंडर्ड डिडक्शन, जो नए टैक्स रिजीम में 75,000 तक दिया जा रहा है। यह फ्लैट छूट है, जिसे हर सैलरीड क्लेम कर सकता है।
- दूसरा बड़ा घटक है एम्प्लॉयर का पीएफ योगदान। आपकी बेसिक सैलरी का लगभग 12% हिस्सा कंपनी आपके प्रोविडेंट फंड में जमा करती है, जो टैक्स फ्री होता है। उदाहरण के तौर पर यह राशि करीब 95,100 रुपये तक हो सकती है।
- तीसरा और बेहद अहम हिस्सा है एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)। सेक्शन 80सीसीडी(2) के तहत कंपनी द्वारा बेसिक सैलरी का 14% तक का योगदान टैक्स से मुक्त होता है। यह लगभग 1,10,950 रुपये तक की छूट दे सकता है।
- चौथा घटक है मील वाउचर्स, जिससे सालाना 1,05,600 रुपये की सीधी कटौती मिलती है। इन सभी को जोड़ने पर कुल टैक्स छूट 3,86,650 रुपये तक पहुंच जाती है। यही वह "स्मार्ट गणित" है, जो आपकी टैक्सेबल इनकम को काफी नीचे ले आता है।

12 लाख की सीमा और जीरो टैक्स का फायदा

नए टैक्स सिस्टम में एक महत्वपूर्ण सीमा 12 लाख रुपये की है। यदि आपकी टैक्सेबल इनकम 12 लाख रुपये या उससे कम रहती है, तो आपको रिबेट का फायदा मिलता है और आपका प्रभावी टैक्स शून्य हो जाता है। जब 15.85 लाख रुपये की सैलरी में से 3.86 लाख रुपये की छूट घटाई जाती है, तो आपकी नेट टैक्सेबल इनकम लगभग 11.98 लाख रुपये रह जाती है। यह 12 लाख रुपये की सीमा से नीचे है, इसलिए आपको कोई टैक्स नहीं देना पड़ता। यानी सही स्ट्रक्चरिंग और प्लानिंग के जरिए आप कानूनी रूप से अपनी टैक्स देनदारी को पूरी तरह खत्म कर सकते हैं।

वसीयत, नॉमिनेशन और इंश्योरेंस हैं, परिवार के भविष्य की मजबूत दीवारें

योजना | बिजनेस डेस्क

अक्सर जब लोग एस्टेट प्लानिंग शब्द सुनते हैं, तो उनके मन में यह धारणा बन जाती है कि यह केवल अमीर लोगों या रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके लोगों के लिए होती है। लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल अलग है। एस्टेट प्लानिंग का मतलब है अपने वित्तीय संसाधनों और संपत्तियों को इस तरह व्यवस्थित करना कि किसी भी अनहोनी की स्थिति में आपके परिवार को आर्थिक और कानूनी परेशानियों का सामना न करना पड़े। खासकर 30 की उम्र वह पड़ाव होती है, जब जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं और ऐसे में सही समय पर की गई प्लानिंग बेहद अहम हो जाती है।

30 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते व्यक्ति का जीवन कई बदलावों से गुजरता है। करियर स्थिर होने लगता है, शादी हो जाती है, बच्चों की जिम्मेदारी जुड़ जाती है और कई बार घर या वाहन के लिए लोन भी लिया जाता है। ऐसे में आपकी फाइनेंशियल जिम्मेदारियां सिर्फ आपके तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि पूरे परिवार पर निर्भर हो जाती हैं। यदि किसी कारणवश आपके साथ कुछ अनहोनी हो जाए, तो परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है। एस्टेट प्लानिंग इस जोखिम को कम करती है और आपके परिवार को सुरक्षित भविष्य देने में मदद करती है।

30 की उम्र में एस्टेट प्लानिंग, आज की तैयारी, कल की सुरक्षा

वसीयत : स्पष्टता-सुरक्षा का आधार

एस्टेट प्लानिंग का सबसे महत्वपूर्ण और पहला कदम है वसीयत बनाना। वसीयत एक कानूनी दस्तावेज होता है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से लिखा होता है कि आपकी संपत्ति, निवेश और अन्य एसेट्स किसे और कैसे मिलेंगे। अगर वसीयत नहीं बनाई गई है, तो आपकी संपत्ति का बंटवारा कानून के अनुसार होगा, जिसमें समय भी ज्यादा लग सकता है और परिवार को अनावश्यक कानूनी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ सकता है। इससे विवाद की स्थिति भी पैदा हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि आप समय रहते वसीयत बनाएं और जीवन में बदलाव (जैसे शादी, बच्चे, नई संपत्ति) आने पर उसे अपडेट भी करते रहें।

नॉमिनेशन : आसान एक्सेस की कुंजी

कई लोग बैंक अकाउंट, म्यूचुअल फंड, पीएफ, इंश्योरेंस पॉलिसी और अन्य निवेशों में नॉमिनेशन करना या अपडेट करना भूल जाते हैं। यह एक छोटी लेकिन बेहद महत्वपूर्ण चूक हो सकती है। सही नॉमिनेशन होने से जरूरत के समय आपके परिवार के सदस्य आसानी से पैसे तक पहुंच सकते हैं। इसके विपरीत, यदि नॉमिनेशन नहीं है या गलत है, तो क्लेम प्रक्रिया लंबी और जटिल हो सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि आप समय-समय पर अपने सभी वित्तीय खातों और निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। इससे परिवार को संकट के समय मानसिक और आर्थिक दोनों तरह की राहत मिलती है।

जीवन बीमा: आर्थिक सुरक्षा की ढाल

एस्टेट प्लानिंग का एक अहम हिस्सा है जीवन बीमा। यह सिर्फ टैक्स बचाने का जरिया नहीं, बल्कि आपके परिवार के लिए आर्थिक सुरक्षा कवच है। यदि परिवार की आय का मुख्य स्रोत आप हैं, तो आपके न रहने की स्थिति में लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी आपके परिवार को आर्थिक रूप से संभाल सकती है। इससे घर का खर्च, बच्चों की पढ़ाई, लोन की ईएमआई जैसी जिम्मेदारियां पूरी की जा सकती हैं। 30 की उम्र में बीमा लेने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि उस समय प्रीमियम कम होता है और आपको बेहतर कवर मिल सकता है। साथ ही, आप अपनी जरूरत और लक्ष्यों के अनुसार सही पॉलिसी चुन सकते हैं।

बढ़ती जिम्मेदारियों के बीच वित्तीय सुरक्षा का मजबूत आधार

समय पर लिए गए फैसले परिवार को कानूनी और आर्थिक तनाव से बचाते हैं

दस्तावेजों का सही प्रबंधन भी जरूरी

एस्टेट प्लानिंग केवल वसीयत और बीमा तक सीमित नहीं है। इसमें आपके सभी जरूरी दस्तावेजों का सही तरीके से रखरखाव भी शामिल है। जैसे बैंक डिटेल्स, इंश्योरेंस पॉलिसी, प्रॉपर्टी पेपर्स, लोन दस्तावेज, निवेश संबंधी जानकारी आदि। इन सभी को एक जगह व्यवस्थित रखना और परिवार के किसी विश्वसनीय सदस्य को इसकी जानकारी देना बहुत जरूरी है। इससे जरूरत के समय भागदौड़ और भ्रम की स्थिति नहीं बनती।

जल्दी प्लानिंग के फायदे

कई लोग एस्टेट प्लानिंग को टालते रहते हैं, यह सोचकर कि अभी उम्र कम है या अभी इसकी जरूरत नहीं है। लेकिन यही सबसे बड़ी गलती होती है। जल्दी शुरुआत करने से आप बेहतर और सोच-समझकर फैसले ले सकते हैं। साथ ही, समय के साथ अपनी प्लानिंग को अपडेट और बेहतर भी कर सकते हैं। यह एक बार का काम नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो आपके जीवन के हर बदलाव के साथ विकसित होती रहती है।

उठाने का सबसे सही समय

एस्टेट प्लानिंग केवल संपत्ति के बंटवारे का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आपकी जिम्मेदारी और दूरदर्शिता का प्रतीक है। वसीयत, सही नॉमिनेशन और लाइफ इंश्योरेंस के जरिए आप अपने परिवार को भविष्य की अनिश्चितताओं से सुरक्षित कर सकते हैं। 30 की उम्र इस दिशा में पहला मजबूत कदम उठाने का सबसे सही समय है। आज की गई सही प्लानिंग आपके परिवार को कल के संकट से बचा सकती है और उन्हें एक सुरक्षित व स्थिर जीवन दे सकती है।

खबर संक्षेप

पंचमुखी बालाजी धाम पर बस स्टॉपेज स्वीकृत

हिसार। सामाजिक संस्था सजग, अग्रवाल सेवा समिति, अग्रवाल वैश्य महासम्मेलन, हरियाणा अग्रवाल विकास संगठन, संयम, यज्ञ-हवन विश्व कल्याण द्वारा की गई सिद्धपीठ श्री पंचमुखी बालाजी धाम, चौधरीवास के समक्ष बस स्टॉप की मांग को रोडवेज महाप्रबंधक राहुल मित्तल ने तत्काल प्रभाव से स्वीकृति प्रदान कर दी है। इसके तहत धाम के सामने बसों के ठहराव के आदेश जारी कर दिए गए हैं। महाप्रबंधक राहुल मित्तल ने हरियाणा राज्य परिवहन कार्यालय में नगर निगम पार्षद संजय डालमिया एवं वरिष्ठ समाजसेवी एवं वास्तुविद सत्यपाल अग्रवाल को आदेश की प्रति सौंपीं। इस अवसर पर ट्रैफिक इंचार्ज श्रवण कुमार तथा ट्रैफिक सहायक किशोर कुमार भी उपस्थित रहे।

श्री श्याम मंदिर का पंचम स्थापना दिवस 21 को

हिसार। सेक्टर 16-17 श्री श्याम मंदिर का पंचम स्थापना दिवस समारोह 21 अप्रैल को मंदिर प्रांगण में अत्यंत श्रद्धा और भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा। इस पावन अवसर पर खाटूधाम से श्री श्याम प्रभु के निज मंदिर के मुख्य सेवक श्रद्धेय मोहन दास जी महाराज का विशेष सानिध्य प्राप्त होगा, जिनके सानिध्य में श्याम प्रभु की पूजा-अर्चना एवं तिलक-श्रृंगार सेवा सम्पन्न होगी। श्री श्याम मंडल के प्रधान दिनेश बिंदल, उपप्रधान त्रिलोक बंसल, सचिव रमेश मित्तल एवं कोषाध्यक्ष सुभाष बंसल ने बताया कि वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में सायं 4 बजे से 7.15 बजे तक भट्ठू मंडी मंडल के श्याम भक्तों द्वारा ताली कीर्तन किया जाएगा, जिसमें श्याम प्रभु की महिमा का गुणगान होगा।

बार लिटिगेशन हाल का नवीनीकरण शीघ्र

हिसार। सिवानी मंडी बार लिटिगेशन हाल का नवीनीकरण और पार्क का निर्माण कार्य प्रगति पर है और शीघ्र पूरा हो जाएगा। इस कार्य को मंजूरी दिलाने में बार एसोसिएशन सिवानी मंडी के पूर्व प्रधान सुधीर श्योराण के विशेष प्रयास एवं निरंतर अनुशंसा सराहनीय रही है। बार एसोसिएशन सिवानी मंडी के पूर्व प्रधान सुधीर श्योराण ने कहा कि इस परियोजना से संबंधित मांग मुख्यमंत्री के समक्ष उठाई गई थी। इसके बाद संबंधित विभाग द्वारा विस्तृत एस्टीमेट तैयार कर मुख्यमंत्री को भेजा गया। मुख्यमंत्री द्वारा इस परियोजना के लिए लगभग 90 लाख रुपये की राशि को स्वीकृति प्रदान कर दी गई। इस स्वीकृति के उपरांत विभाग द्वारा नियमानुसार टेंडर प्रक्रिया पूर्ण की जा चुकी है तथा कार्य का निष्पादन शुरू कर दिया गया है।

लुदास व शाहपुर में वाटर कूलर स्थापित

हिसार। भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा ने सेवा प्रकल्प के तहत गांव लुदास और शाहपुर के सरकारी स्कूलों में वॉटर कूलर की स्थापना की। इसके अलावा संस्कार प्रकल्प के तहत नशे के खिलाफ बच्चों को प्रेरित भी किया। इस मौके पर विवेकानंद शाखा के गतिविधि संयोजक सेवा के प्रमुख सीताराम मंगल, अशोक गर्ग तिलकधारी, राजेश जैन, जिलाध्यक्ष ऋषिराज बुड़ाकिया, शाखा सचिव सूर्य गोयल, कोषाध्यक्ष आशीष जैन, अमर गोयल, नरेश बंसल, मनीराम बंसल, हेमंत बंसल, मनीष जैन, सुरेंद्र कुच्छल, सुमित मित्तल व रेनू मंगल सहित शाखा के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

कैबिनेट मंत्री से मिला सैन सभा प्रतिनिधिमंडल

हिसार। जिला सैन सभा की नवनियुक्त कार्यकारिणी ने कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा से शिष्टाचार भेंट कर समाज से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। मुलाकात के दौरान सभा की ओर से सैन धर्मशाला के नवीनीकरण, छात्रावास के विकास तथा परिसर में पांच किलोवाट सोलर सिस्टम स्थापित करने के लिए कुल 11 लाख रुपये की मांग रखी गई। प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री को अवगत कराया कि धर्मशाला में आने वाले लोगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक है। मंत्री ने सभी मांगों को गंभीरता से सुना और समाज के हित में हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

आकर्षक ऑफर देकर लोगों को फंसा रहे जाल में

चारधाम यात्रा पर ठगों की नजर ऑनलाइन बुकिंग में रहें सतर्क

- सस्ती दरों की लालच में एडवांस भुगतान न करें
- ओटीपी, बैंक डिटेल या निजी जानकारी साझा न करें

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

सिद्धांत जैन, एसपी

जिला पुलिस ने चारधाम यात्रा 2026 के दौरान श्रद्धालुओं को ऑनलाइन बुकिंग के नाम पर होने वाली साइबर ठगी के प्रति सचेत किया है। पुलिस ने एडवाइजरी जारी करते हुए जिलावासियों से अपील की है कि वे होटल, टूर पैकेज, टैक्सी या हेलीकॉप्टर बुकिंग करते समय विशेष सतर्कता बरतें।

पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने बताया कि हाल के समय में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें साइबर ठग फर्जी वेबसाइट, सोशल मीडिया पेज व व्हाट्सऐप नंबर के माध्यम से लोगों को आकर्षक ऑफर दिखाकर अपने जाल में फंसा लेते हैं। ये अपराधी सरकारी व प्रतिष्ठित कंपनियों जैसी दिखने वाली नकली वेबसाइट बनाकर एडवांस पेमेंट करवा लेते हैं, लेकिन बुकिंग की कोई पुष्टि नहीं मिलती। कई बार इन फर्जी लिंक के जरिए लोगों की बैंक व निजी जानकारी भी चुरा ली जाती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी प्रकार की ऑनलाइन बुकिंग करने से पहले संबंधित वेबसाइट या एजेंसी की विश्वसनीयता की जांच अवश्य करें। केवल आधिकारिक वेबसाइट और प्रमाणिक प्लेटफॉर्म का ही उपयोग करें। किसी भी अनजान लिंक, ई-मेल या कॉल के माध्यम से मांगी गई जानकारी साझा न करें और बिना जांच-पड़ताल के किसी को भी भुगतान न करें।

जिलेभर में पुलिस ने की फुट पैट्रोलिंग

हिसार। जिले में अपराध व अपराधियों पर नकेल कसने के लिए पुलिस का जिला स्तरीय पैदल गश्त अभियान जारी है। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के नेतृत्व में जिलेभर के संवेदनशील इलाकों में हुई फुट पेट्रोलिंग की गई। इस दौरान आमजन में सुरक्षा का भाव जगाने और पुलिस-जन संवाद बढ़ाने पर विशेष जोर रहा। जिले में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने और अपराधों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से पुलिस की ओर से व्यापक स्तर पर मासिक पैदल गश्त (फुट पेट्रोलिंग) अभियान चलाया गया। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के निर्देशन में यह अभियान जिलाभर के सभी थाना एवं चौकी क्षेत्रों में एक साथ संचालित किया गया। पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार जिले के संवेदनशील इलाकों में सप्ताह के दो दिन शनिवार और मंगलवार को फुट पेट्रोलिंग का विशेष अभियान चलाया जाता है। इस दौरान पुलिस की टीमों ने बाजारों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, चौक-चौराहों और भीड़-भाड़ वाले सार्वजनिक स्थलों पर गश्त की। पुलिस के अनुसार दृश्यता और सुरक्षा के तहत सड़कों पर पुलिस की मौजूदगी बढ़ाकर आम नागरिकों में सुरक्षा का विश्वास पैदा करना, सार्वजनिक स्थानों पर सक्रिय गश्त के जरिए असामाजिक तत्वों पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाना, उन इलाकों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया जहां पूर्व में आपराधिक घटनाएं घटित हुई व पुलिस-जन संवाद पर ध्यान देते हुए केवल गश्त ही नहीं की गई, बल्कि पुलिस कर्मियों ने स्थानीय दुकानदारों, राहगीरों और प्रबुद्ध नागरिकों से सीधा संवाद भी किया।

विधायक रणधीर ने गोशालाओं को दिए 84 लाख से अधिक के चेक

- पनिहार ने गोशालाओं का निरीक्षण कर ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हिसार। गोशालाओं में सहायता राशि के चेक वितरित करते व ग्रामीणों की समस्याएं सुनते हुए विधायक रणधीर पनिहार। फोटो: हरिभूमि

नलवा क्षेत्र के विधायक रणधीर पनिहार ने शनिवार को जिले के चौधरीवास, कालवास, मंगाली, कैमरी, शाहपुर तथा मिंगनी खेड़ा स्थित गौशालाओं में पहुंचकर वहां की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और सरकार की ओर से दी गई कुल 84 लाख रुपये से अधिक की सहायता राशि के चेक गौशालाओं को वितरित किए, जिससे गौवंश की बेहतर देखभाल और व्यवस्थाओं को और सुदृढ़ किया जा सकेगा। दौरे के दौरान विधायक ने जनसुनवाई कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याएं गंभीरता से सुनीं। उन्होंने मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए समस्याओं के शीघ्र समाधान के निर्देश दिए।

इस अवसर पर उन्होंने जिले की विभिन्न गौशालाओं को सहायता राशि के चेक वितरित किए। श्री कृष्ण सुदामा गौशाला चौधरीवास को 5,80,520 रुपये, गुरु जंभेश्वर गौशाला कालवास को 8,75,655 रुपये, श्री बाला जी गौशाला मंगाली को 11,47,240 रुपये, श्री कृष्ण प्रणामी गौशाला कैमरी को 21,34,695 रुपये, बाबा बिंजपुरी गौशाला शाहपुर को 21,60,160 रुपये, श्री श्याम गौशाला मिंगनी खेड़ा को 11,50,460 रुपये तथा चौधरी टिब्बा को 4 लाख 19 हजार 980 रुपए की राशि प्रदान की गई है।

इस अवसर पर दलबीर धीरणवास, भीम, सुरेंद्र खटक सरसाना, सुभाष पनिहार, गुलाब धानक, चिड़ोद सरपंच मोलू राम, मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन अनिल डालमिया, मिंगनी खेड़ा सरपंच जंग बहादुर, मिंगनी खेड़ा गौशाला प्रधान सज्जन गर्ग, मंजू पूनिया, अनिल केमरी, ओमप्रकाश भांभू, पतराम सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

डीसी ने मंडियों का लिया जायजा

हरिभूमि न्यूज ⏭ बरवाला

बरवाला। अनाजमंडी में निरीक्षण करते डीसी महेंद्र पाल व अन्य। फोटो: हरिभूमि

उपायुक्त महेंद्र पाल ने बरवाला व उकलाना अनाज मंडियों का दौरा कर फसल खरीद, भंडारण प्रबंधन और उठान कार्यों का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मंडियों में किसानों को मिल रही सुविधाओं, खरीद प्रक्रिया की पारदर्शिता और उठान की गति का विस्तार से जायजा लिया तथा मौके पर मौजूद अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। दौरे के दौरान उपायुक्त ने मंडियों में पहुंचे किसानों से भी बातचीत की और उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने किसानों को आश्वस्त किया कि सरकार उनकी फसल की खरीद सुचारू रूप से सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

लापरवाही पर होगी सख्त कार्रवाई

उपायुक्त महेंद्र पाल ने ठेकेदारों द्वारा किए जा रहे उठान कार्यों की भी समीक्षा की और स्पष्ट निर्देश दिए कि ठेकेदारों की गाड़ियों की नियमित रूप से फिजिकल वेरीफिकेशन की जाए, ताकि किसी प्रकार की गड़बड़ी या फर्जीवाड़ा न हो। उन्होंने कहा कि उठान कार्य में तेजी लाना बेहद जरूरी है, जिससे मंडियों में फसल का अनावश्यक जमाव न हो और खरीद प्रक्रिया प्रभावित न हो। उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि उठान कार्य में किसी भी प्रकार की ढिलाई या लापरवाही सामने आने पर अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

कम लागत में मशरूम पैदावार कर बनें आत्मनिर्भर

- राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हिसार। मुख्य अतिथि डॉ. नरेश कौशिक प्रतिभागियों के साथ। फोटो: हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान की ओर से 'मशरूम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं हरियाणा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन अपनाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन एक पर्यावरण-अनुकूल एवं कम लागत वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार चुघ ने मशरूम के पोषण एवं औषधीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आयस्टर मशरूम पौष्टिकता में किसी भी अन्य मशरूम से कम नहीं है इसकी उत्पादन तकनीक सरल है और लागत मात्र 20 से 22 रुपए प्रति किलोग्राम है।

दिया जा रहा प्रशिक्षण

संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि यह संस्थान किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के कौशल विकास के लिए नियमित रूप से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राप्त करके अनेक युवा स्वरोजगार स्थापित कर चुके हैं। इस मौके पर प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. सतीश कुमार मेहता, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. विकास कम्बोज आदि मौजूद थे।

जोमैटो डिलीवरी बॉय से मारपीट, आरोपी काबू

हिसार। मिलगेट थाना पुलिस ने जोमैटो डिलीवरी बॉय के साथ मारपीट करने व धमकी देने के मामले में दो मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों की पहचान सैनियान मोहल्ला निवासी अरूण व भगत सिंह नगर निवासी चिराग के रूप में हुई है। जांच अधिकारी सहायक उप निरीक्षक पप्पू राम ने बताया कि इस संबंध में जोमैटो ब्वाय 26 वर्षीय गौरव ने शिकायत दी थी। शिकायत के अनुसार गत 14 अप्रैल को सायं लगभग 4.20 बजे जब वह अपनी मोटरसाइकिल से डिलीवरी देने जा रहा था, तब तैलियान पुल पर तीन लड़कों ने उसे जबरन रोका। आरोपी अरुण ने उसके दाहिने हाथ पर किसी नुकीली चीज से वार किया तथा अन्य साथियों ने उसे थप्पड़, मुक्कों और लातों से बुरी तरह पीटा। आरोपियों ने पीड़ित को जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने केस दर्ज करके छानबीन करते हुए दो आरोपियों अरुण व चिराग को काबू करके वारदात में इस्तेमाल किया गया डंडा बरामद कर लिया है। जांच में पता चला कि दोनों आरोपियों का पूर्व में भी आपराधिक रिकॉर्ड रहा है। इन दोनों के खिलाफ थाना मिल गेट में लड़ाई-झगड़े के संबंध में पहले से ही एक-एक केस दर्ज है।

लाखों की धोखाधड़ी करने वाला दूसरा आरोपी पंचकूला से काबू

- इन्वेस्टमेंट फ्रॉड के नाम पर 40 लाख की ठगी का आरोप

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हिसार। पकड़ा गया ठगी का आरोपी। फोटो: हरिभूमि

हिसार साइबर थाना पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। साइबर थाना पुलिस ने ऑनलाइन ट्रेडिंग के नाम पर करीब 40 लाख की ठगी करने के मामले में एक आरोपी को पंचकूला से गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सेक्टर 29ए चंडीगढ़ निवासी दिनेश के रूप में हुई है। जांच अधिकारी उप निरीक्षक नरेंद्र ने बताया कि आरोपी के कब्जे से वारदात में इस्तेमाल किया गया मोबाइल फोन बरामद किया गया है। उसे अदालत में पेश किया गया, जहां से न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। जांच अधिकारी के अनुसार इस संबंध में कृषि विभाग में कार्यरत घनश्याम ने शिकायत दर्ज करवाई थी। साइबर पोर्टल पर दर्ज शिकायत में कहा कि फेसबुक के जरिए उनकी दोस्ती एक अज्ञात आईडी से हुई थी। झांसे में लेकर उन्हें एक फर्जी ट्रेडिंग वेबसाइट पर निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुनाफे का लालच देकर शिकायतकर्ता से अलग-अलग किस्तों में कुल 40 लाख रुपये की धोखाधड़ी की गई। जब उन्होंने पैसे निकालने की कोशिश की, तो उनसे और पैसों की मांग की गई, जिसके बाद उन्हें ठगी का अहसास हुआ। पुलिस टीम द्वारा आरोपी को अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

ठगी का आरोपी पुलिस रिमांड पर

हांसी। शहर थाना पुलिस ने नौकरी दिलवाने के नाम पर ठगी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सिसाय बोलान निवासी खेमचंद उर्फ दीपक के रूप में हुई है। जांच अधिकारी एसआई जोगिंद्र कुमार ने बताया कि आरोपी खेमचंद उर्फ दीपक द्वारा आम लोगों को हरियाणा कौशल रोजगार निगम के तहत नौकरी लगवाने का झांसा देकर रुपए ऐंठे जा रहे थे। इसके अलावा आरोपी द्वारा वाहनों की वैधता बढ़वाने एवं उनकी पासिंग करवाने के कार्यों के नाम पर भी लोगों से धनराशि ली जाती थी। शिकायत प्राप्त होने पर थाना शहर हांसी में आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया।

नशा सप्लाई करने वाली महिला गिरफ्तार

नारनौंद। पुलिस की टीम ने अवैध नशा सप्लाई वाली महिला को गिरफ्तार किया है। सीआईए में तैनात उप निरीक्षक विनोद कुमार ने बताया कि पुलिस टीम गश्त के दौरान नारनौंद के खांडा मोड़ के पाससुमित निवासी वार्ड 10 नारनौंद राजथल को नशीला पदार्थ के साथ काबू किया। कर पूछताछ की गई, जिसने अपना नाम सुमित निवासी नारनौंद बताया। तलाशी में आरोपित के कब्जे से 3.30 ग्राम हेरोइन बरामद हुआ था। उसने बताया कि वो नशा नारनौंद में रहने वाली राजपति से लेकर आया है। पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए आरोपित महिला को भी गिरफ्तार किया गया।

ओशो ध्यान उपवन में ध्यान सत्र आज

हिसार। ओशो ध्यान उपवन में 19 अप्रैल को ध्यान सत्र का आयोजन किया जाएगा। प्रातः 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक चलने वाले इस ध्यान सत्र में साधकों को विभिन्न ध्यान विधियों को न केवल सिखाया जाएगा बल्कि उनका अभ्यास भी करवाया जाएगा। इस रविवारीय मेडिटेशन के आयोजक स्वामी संजय व मां सांची ने बताया कि ध्यान को जीवन का अभिन्न अंग बनाना नितांत आवश्यक है।

न्यूज डायरी

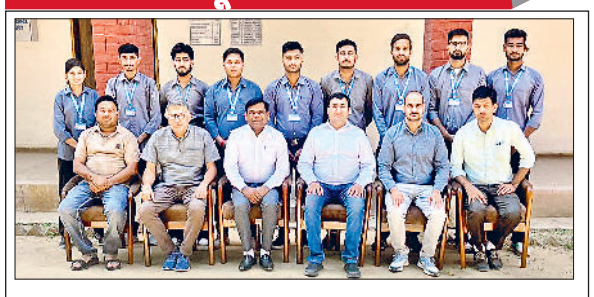

आदमपुर। बहुतकनीकी संस्थान में चुने गए विद्यार्थी स्टाफ के साथ।

प्लेसमेंट ड्राइव में 10 विद्यार्थियों का चयन

आदमपुर। उन्नत बैटरी निर्माण एवं ऊर्जा भंडारण समाधान के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी एटीएल बैटरी टैक्नोलॉजी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, बावल द्वारा राजकीय बहुतकनीकी, धांगड़ में एक तकनीकी पूल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। प्लेसमेंट ड्राइव में राजकीय बहुतकनीकी, मंडी आदमपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। चयन प्रक्रिया में लिखित तकनीकी परीक्षा, एप्टीट्यूड टेस्ट, तथा तकनीकी एवं एचआर साक्षात्कार शामिल थे। इन सभी चरणों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के 3 और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग के 7 विद्यार्थियों का अंतिम रूप से चयन किया गया। संस्थान के प्राचार्य डॉ. बिजेन्द्र सिंह और टीपीओ नरेश कुमार ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की।

अग्रवाल सेवा समिति ने विधायक को सौंपा मांगपत्र

हिसार। अग्रवाल सेवा समिति अर्बन एस्टेट-2 के प्रधान एवं वार्ड 13 के पार्षद संजय डालमिया व समिति सदस्यों ने जनकल्याण व छात्रावास के लिए समिति के लिए विधायक सावित्री जिंदल से तीन—चार हजार गज जमीन दिलवाने के लिए मांग पत्र सौंपा। अग्रवाल सेवा समिति के प्रवक्ता वीरेंद्र गुप्ता ने बताया कि समिति के प्रधान संजय डालमिया व सभी सदस्य विधायक सावित्री जिंदल के आवास पर गए और उन्हे बताया कि अग्रवाल सेवा समिति पिछले 25 वर्षों से हिसार में सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रही है। भविष्य में भी समिति सामाजिक कार्यों में अग्रसर रहे इस लिए समिति को छात्रावास व अन्य धार्मिक कार्यक्रमों के लिए सरकार से स्थायी तौर पर जमीन दिलवाई जाए। इस मौके पर समिति के नवनियुक्त प्रधान संजय डालमिया, प्रवक्ता वीरेंद्र गुप्ता, पूर्व प्रधान जयकुमार बंसल के अलावा समिति के सभी सदस्य मौजूद रहे।

समिति ने मनाई भगवान परशुराम की जयंती

हिसार। भगवान परशुराम जनसेवा समिति की ओर से समिति के मुख्य संरक्षक एचके शर्मा की अध्यक्षता में परशुराम जन्मोत्सव मनाया गया। समिति के सदस्यों ने परशुराम चौक की सफाई करते हुए भगवान परशुराम के शस्त्रों की शंख-फर्सी की पूजा अर्चना की। उसके उपरांत भगवान परशुराम के बारे में विस्तार से बताया गया। समिति के संस्थापक अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा ने भगवान परशुराम के आदर्शों पर चर्चा की और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इस मौके पर ब्राह्मण सभा के कोषाध्यक्ष कुलभूषण शर्मा, पूर्व पार्षद प्रतिनिधि सुशील शर्मा, पंकज दिवान, बलराज मलिक, अशोक शर्मा, राजेन्द्र कौशिक, वेद प्रकाश कौशिक, रविकांत वत्स, बृजेश पाण्डेय, सुरेश शर्मा, बलवान शर्मा, राजेश भारद्वाज, बलजीत जांगड़ा, जनक गौड़, विकास गौड़ आदि मौजूद थे।

अतिरिक्त मुख्य सचिव 22 अप्रैल को दिव्यांग संस्थानों का करेंगे निरीक्षण

हिसार। हरियाणा के सामाजिक न्याय, सशक्तिकरण, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं अंत्योदय (सेवा) विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव 22 अप्रैल को हिसार जिले के दौरे पर रहेंगे। प्रवक्ता ने बताया कि अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा दिव्यांगजन कल्याण सोसायटी के अंतर्गत संचालित संस्थानों का निरीक्षण कर उनकी कार्यप्रणाली, आधारभूत ढांचे तथा उपलब्ध सुविधाओं की समीक्षा करेंगे। वे जिले में रेड क्रॉस इंस्टीट्यूट फॉर द विजुअली हैंडीकैप्ड, अर्ली इंटरवेंशन प्रोग्राम तथा आंचल मानसिक विकास केंद्र का निरीक्षण करेंगे। इन संस्थानों में दिव्यांगजनों को दी जा रही सेवाओं की गुणवत्ता, इंफ्रास्ट्रक्चर और अन्य व्यवस्थाओं का भी जायजा लेंगे।

जयदियाल धर्मशाला में संगत से मनाया संत सुखदेवानंद महाराज का जन्मदिन

संत बोले, दूसरों की गलतियों को व अतीत के कड़वे संस्मरणों को भूला देना चाहिए

मन की शांति बाजार में नहीं, अपने अंदर ही मिलेगी : संत सुखदेवानंद

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हिसार। संत सुखदेवानंद महाराज प्रवचन देते हुए व उपस्थित श्रद्धालु।

श्रीयोग अनुभव सेवा समिति के तत्वाधान में शास्त्री नगर स्थित जयदियाल धर्मशाला में संत सुखदेवानंद महाराज के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग के दौरान प्रवचन देते हुए संत सुखदेवानंद महाराज ने कहा कि मन की शांति के लिए मनुष्य को दर-दर भटकने की जरुरत नहीं है। असली शांति तो उसके मन के अंदर ही मिलेगी। मन को एकाग्र करके जब प्रभु सिमरण में लगाओगे तो स्वयं ही शांति का सुखद अनुभव होगा। संत सुखदेवानंद महाराज ने कहा कि अगर कुछ भूलना हो तो अपनी नेकियों को भूल जाओ, दूसरों की गलतियों को व अतीत के कड़वे संस्मरणों को भी भूला देना चाहिये। जीवन में सफल होने का मंत्र बताते हुए उन्होंने कहा कि दूसरों को नीचा दिखाना छोड़ दें, दूसरों की सफलता से जलना छोड़ दो, दूसरों के धन की चाह रखना, दूसरों की चुगली करना व दूसरों की सफलता पर दुखी होना छोड़ दो, जीवन जीने का आनंद आ जाएगा। इस मौके पर साध्वी सर्वयोगानंद ने भजनों की वर्षा की जिन पर श्रद्धालु झूमने पर मजबूर हो गये।

ये रहे मौजूद

सत्संग में संत पुरुषार्थानंद, साध्वी सर्वयोगानंद, साध्वी निजआत्मयोगानंद, साध्वी निष्कामयोगानंद, साध्वी अनंतयोगानंद, साध्वी सत्यानंद, महात्मा कृपाल योगानंद, महात्मा सहज प्रेमानंद आदि ने भी प्रवचन दिए। इससे पूर्व सत्संग स्थल पर पहुंचने पर सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने संत सुखदेवानंद महाराज का मालाओं व फूलों की वर्षा करके स्वागत किया। इस दौरान संगत की ओर से केक भी कटवाया गया। कार्यक्रम में नगर के विभिन्न क्षेत्रों से आए सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

हांसी की जाट धर्मशाला में सर्व समाज की ओर से हुआ भाईचारा स्नेह मिलन समारोह

भाईचारा बनाने के लिए आगे आएं खाप-पंचायतें : कैप्टन अभिमन्यु

■ सर्व समाज की ओर से पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु को पहनाई पगड़ी

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने खाप पंचायतों व समाज के गणमान्य व्यक्तियों से अनुरोध किया है कि वे भाईचारा बनाकर रखने के लिए आगे आएं। खाप पंचायतों की भूमिका हर समय महत्वपूर्ण रही है और अब भी ऐसी ही भूमिका निभाने की जरूरत है ताकि युवा वर्ग को अपराध व नशे से बचाकर उन्हें सही दिशा दी जा सके।

कैप्टन अभिमन्यु शनिवार को हांसी जाट धर्मशाला में सर्व समाज की ओर से आयोजित भाईचारा स्नेह मिलन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में सर्व समाज की ओर से पगड़ी पहनाकर व मालाएं डालकर कैप्टन अभिमन्यु का जोरदार स्वागत किया गया। कैप्टन अभिमन्यु ने सर्व समाज को विश्वास दिलाया कि वे भाईचारा बनाए रखने के लिए सदैव भरपूर साथ देंगे। उन्होंने कार्यक्रम के नाम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आयोजकों ने भाईचारा स्नेह मिलन नाम आज की जरूरत के अनुसार ही रखा है। वास्तव में आज भाईचारा बनाए रखने की नितांत आवश्यकता है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि समाज के लोग, खासकर युवा व बच्चे छोटी-छोटी बातों से गुमराह न हो, सच्चाई को जाने और अपना भला-बुरा पहचाने। भाजपा नेता ने याद दिलाया कि पुराने समय में सभी जात-बिरादरी के लोग मिल जुलकर रहते थे, एक-दूसरे के काम आते थे लेकिन धीरे-धीरे इस भाईचारे में दरार पड़ने लगी। वर्ष 2010 में आरक्षण आंदोलन के नाम पर हमारे युवाओं को गुमराह किया गया, जिसकी सजा आज भी युवा वर्ग भुगत रहा है लेकिन कुछ लोगों ने इसका फायदा उठाया। उन्होंने कहा कि जातपात का सहारा केवल वे ही लोग लेते हैं जो कर्म से कमजोर होते हैं और जिन्हें अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं होता। ऐसे लोग भी हैं, जिन्होंने जाति का सहारा लेकर सरकार बनाई लेकिन सरकार बनने के बाद जाति को भूल गए। यह ठीक है कि जातियां हमारे रिश्तों व समाज की पहचान हैं, लेकिन जातियों में भाईचारा बहुत जरूरी है, तभी हमारी पहचान व रिश्ते कायम रह सकते हैं। कैप्टन अभिमन्यु ने विपक्ष के लोगों को लताड़ते हुए कहा कि वर्ष 2010 में जाति का सहारा लेने के लिए रावण लीला रची गई, अब सबको पता चल गया कि रावण लीला किसने रची थी। अब ऐसा करने वाले बेनकाब हो चुके हैं, समाज को भी पता चल गया कि किस प्रकार उन लोगों के इशारे पर दंगे हुए, गोलियां चलीं और उस समय उन लोगों की ऑडियो तक वायरल हुई, जिसमें वे दंगे भड़काने की बात कहते स्पष्ट सुने जा सकते हैं। अब समय आ गया है कि ऐसे लोगों से बचें और नेतृत्व को पहचानें। उन्होंने कहा कि किसी समय हम आदर्श पुरुष को उदाहरण मानकर उनका अनुसरण करते हैं, क्योंकि उनमें नेतृत्व क्षमता रही है। ऐसे ही हमें अब अपनी नेतृत्व क्षमता पहचाननी है।

ये रहे मौजूद

समारोह में जाट धर्मशाला के प्रधान रणधीर दलाल, रोधी खाप के प्रधान हरदीप शर्मा, सतरोल खाप के प्रधान संदीप खर्ब, सचिव बिजेंद्र नन्हा, प्रवक्ता मास्टर फूलकुमार पेटवाड़, कालीरावणा खाप के राष्ट्रीय अध्यक्ष कर्मबीर कालीरावणा, पेटवाड़ तपा के प्रधान सुंदर सिंधु, सतरोल तपा के उपप्रधान सुनील, उगालन तपा के पूर्व प्रधान जगदीश खरब, नारनौंद तपा के उपप्रधान संजय शर्मा, क्रांतिकारी जाट महासभा के अध्यक्ष संदीप भारती, सर्व खाप युवा पंचायत के जितेंद्र क्रांति, आर्य समाज के संरक्षक प्रविंद्र लोहान, ऑटो मार्केट के पूर्व प्रधान जयसिंह पाली, हांसी भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक सैनी, पूर्व मंत्री कमलेश ढांडा के पुत्र तुषार ढांडा, जिला परिषद के चेयरमैन सोनू डाटा सिहाग, डिप्टी चेयरमैन प्रतिनिधि समुंद्र बूरा, नगर परिषद नारनौंद के प्रधान शमशेर लोहान, बास मार्केट कमेटी चेयरमैन शमशेर मोर, नारनौंद मार्केट कमेटी चेयरमैन उदयभान लोहान, ब्लॉक समिति चेयरमैन कुलदीप कोहाड़, चेयरमैन प्रदीप, बिजेंद्र लोहान व सोनू सैनी के अलावा विभिन्न खापों, सामाजिक व धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

हांसी। सम्मेलन में कैप्टन अभिमन्यु को पगड़ी पहनाकर सम्मानित करते आयोजन समिति सदस्य।

कांग्रेस ने समाज को गुमराह किया

कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि समाज का सिपाही होने के नाते समाज को सचेत करना उनका फर्ज है और वे अपना फर्ज निभाते रहेंगे। कांग्रेस शासनकाल में वर्ष 2013 में फर्जी आरक्षण बिल पेश करके समाज को गुमराह किया गया, मैंने उस समय सचेत किया था, बहुत से लोगों को समझ भी आया, लेकिन फर्जी आरक्षण बिल पेश करने वाली पार्टी के लोगों ने सोचा कि कहीं वे मार न खा जाएं, उन्होंने हरियाणा जलाने की साजिश रचनी शुरू कर दी। कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि जिन लोगों ने रावण लीला रची और हरियाणा जलवाया, वे राजनीतिक फायदा उठाने में कामयाब हो गए लेकिन हमारे युवा बर्बाद हो गए। ऐसा तांडव हरियाणा ही नहीं बल्कि देश में भी कभी नहीं हुआ होगा। सिर्फ एक कोठी जलाने का विषय नहीं, हजारों दुकानें जला दी गईं। रोजगार छिन गया, रोजी-रोटी खत्म हो गई। इतना होने के बाद भी मैंने 19 फरवरी 2016 को कहा कि परिवार बच गया, आप अपने घर जाओ और भाईचारा बनाओ। उन्होंने कटाक्ष किया कि हमें प्यादों से कोई शिकायत नहीं है, लेकिन हम इतना चाहते हैं हमारे युवा गलत रास्तों पर न जाएं और सुख शांति से अपना जीवन व्यतीत करें। जाट आरक्षण आंदोलन के दौरान कुछ लोगों ने एसी में बैठकर लाशों पर राजनीति की।

पूरा समाज गलती नहीं करता

भाजपा नेता ने कहा कि कोई भी पूरा समाज कभी गलती नहीं करता, केवल चार-पांच लोग ही ऐसी गलतियां करते हैं। हमें राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास करने वाले लोगों को पहचानकर युवाओं को समझाना है कि वे किसी की बातों में न आएं।

मां को याद कर हुए भावुक

समारोह के दौरान अपनी माता परमेश्वरी देवी को याद करके कैप्टन अभिमन्यु भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि उनकी कोठी जलाने में जो कोई युवा शामिल थे, उनको माता श्रीमती परमेश्वरी देवी की प्रेरणा से माफ कर दिया, क्योंकि माता जी ने हमें हमेशा यही सिखाया है कि किसी को दुख नहीं देना है। माता जी कहती थीं कि जिसने जो गलती या पाप किया है, उसका फल उसे उसी क्षण से भोगना पड़ता है।

पद की चाह नहीं, लेकिन क्षेत्र के काम रुक गए: अभिमन्यु

कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि सम्मेलन में यह मांग उठी है कि कुछ युवाओं पर केस दर्ज है, उनकी मदद की जाए, लेकिन उनका कहना है कि वर्ष 2010 से जो चिंगारी उठी थी, वहां से समझना व पहचानना शुरू करो, समाज मेरी जो ड्यूटी लगाएगा, मैं उसका सवाया काम करूंगा। पूर्व वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने सम्मेलन में कहा कि भगवान का दिया हुआ बहुत है, पद की चाह नहीं है, लेकिन मैं अपने क्षेत्र का भला करने की सोच हमेशा रखता हूं। वर्ष 2014 में मौका मिला तो काम किया, जो उदाहरण है। अब भी मौका मिलता तो काम करता, लेकिन दुख इस बात का है कि थोड़ी सी चूक की वजह से क्षेत्र का विकास रुक गया।

सिंधु परिवार के फैसले से कई परिवार उजड़ने से बचे : फूल कुमार

सतरोल खाप के प्रवक्ता मास्टर फूलकुमार पेटवाड़ ने कहा कि वर्ष 2016 साल में रोहतक में कैप्टन अभिमन्यु की कोठी फूंकने के बाद कई खापों ने हमारी खाप से संपर्क किया और कहा कि बच्चों से गलती हो गई। कैप्टन आपकी खाप से हैं और उन्हें समझाएं कि बच्चों को छोड़ दें। सतरोल खाप का प्रतिनिधिमंडल अन्य खापों का संदेश लेकर कैप्टन अभिमन्यु के पास गया तो उन्होंने कहा कि मैं कौन होता हूं, माफ करने वाला। सतरोल खाप सरदारी खुद फैसले करे कि उन्हें माफ करना, या इनाम देना है, या फिर सजा। हमारे कहने पर सिंधु परिवार ने सभी बच्चों को माफ कर दिया। उनके एक फैसले ने उजड़ने जा रहे कई परिवार को बचा लिया। इसके लिए सतरोल पिछले माह जींद में उत्तर भारत की सभी खापों ने सिंधु परिवार को सम्मानित भी किया। कैप्टन अभिमन्यु के लिए हरियाणा में प्लेटफार्म तैयार है। समाज में भाईचारे के लिए प्रदेश के हर हिस्से में भाईचारा स्नेह मिलन समारोह करने चाहिए।

21वीं सदी में कैप्टन अभिमन्यु ने सबसे बड़ा त्याग किया : तुषार ढांडा

पूर्व मंत्री कमलेश ढांडा के बेटे तुषार ढांडा ने कहा कि वर्ष 2016 में ऐसा खौफनाक मंजर सामने आया था, जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, जिसके ऊपर गुजरी, वही उस परिस्थिति को भलीभांति समझ सकता है। इतना सब कुछ होने के बाद भी भाईचारे और खापों के कहने पर कैप्टन अभिमन्यु चल पड़े और बच्चों को माफ कर दिया। उन्होंने आह्वान किया कि सम्मेलन में हो रही चर्चा को अपने घर, गांव और भाईचारे में पहुंचाए। 21वीं सदी में किसी ने समाज के लिए सबसे बड़ा त्याग किया है, तो वह हरियाणा में एक ही व्यक्ति कैप्टन अभिमन्यु हैं। नेतृत्व हमारे सामने है, लेकिन पहचानने की कमी है।

हमेशा कैप्टन अभिमन्यु का ऋणी रहेगा समाज : शर्मा

रोधी खाप के प्रधान हरदीप शर्मा ने कहा कि वर्ष 2016 में जाट आरक्षण में भयानक मंजर देखा। इस मामले में 176 गवाही थी। कोर्ट की प्रक्रिया में समय लगता है। कैप्टन अभिमन्यु के हाथ में नहीं था, इसलिए समय लगा। साजिश के शिकार बच्चों को माफ करके कैप्टन अभिमन्यु ने जो कार्य किया है, उसके लिए समाज उनका ऋणी रहेगा।

प्रधान रणधीर दलाल ने किया सभी अतिथियों का स्वागत

इससे पूर्व जाट धर्मशाला में हुए स्नेह मिलन कार्यक्रम की अध्यक्षता जाट धर्मशाला प्रधान रणधीर दलाल .ने की। उन्होंने कैप्टन अभिमन्यु व अन्य अतिथियों का स्वागत किया। सम्मेलन में आर्य समाज के संरक्षक प्रविंद्र लोहान ने कैप्टन अभिमन्यु का जीवन परिचय पढ़ा। मंच का संचालन भाजपा जिला महामंत्री धर्मवीर रतेरिया ने किया। इस मौके पर हरियाणवी गायक विकास सातरोड़ ने अपनी रागनियों ने समारोह में जोश भरने का काम किया।

गलती हो गई, इसे आगे नहीं बढ़ाना : जयसिंह पाली

ऑटो मार्केट के पूर्व प्रधान जयसिंह पाली ने कहा कि दानी सेठ छाजूराम के बाद अगर कोई सबसे बड़ा दानी है तो वे थे चौधरी मित्रसेन जी। हांसी की जाट धर्मशाला के निर्माण चौधरी मित्रसेन जी का सबसे बड़ा योगदान है। दान देने में कैप्टन अभिमन्यु भी कम नहीं हैं। उन्होंने समाज व नारनौंद हलके के विकास के लिए जो काम किया, सबके सामने है। नारनौंद हलके में कितना विकास कैप्टन अभिमन्यु ने करवाया, यह किसी से छिपा नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य है कि गलती हो गई। इस गलती को आगे नहीं बढ़ाना है और आगे कोई कसर नहीं छोड़नी है।

दमकल कर्मियों की हड़ताल न्याय मिलने तक जारी रहेगी : राजेंद्र सिंह

हिसार। हड़ताली कर्मचारियों को संबोधित करते यूनियन पदाधिकारी।

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

नगर पालिका कर्मचारी संघ से संबंधित हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन की कर्मचारियों की मांगों को लेकर की जा रही हड़ताल शनिवार को 11वें दिन भी जारी रही। हड़ताल की अध्यक्षता लीडिंग फायरमैन विकास कुंडू ने की तथा संचालन लीडिंग फायरमैन सीताराम ने किया। इस दौरान हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन के राज्य प्रधान राजेंद्र सिंह व महासचिव गुलशन भारद्वाज भी विशेष रूप से पहुंचे।

हड़ताली कर्मचारियों को संबोधित करते हुए राज्य प्रधान राजेंद्र सिंह ने बताया कि 16 फरवरी को फरीदाबाद के गांव मुजेसर स्थित एक स्टील कंपनी में लगी भीषण आग को बुझाते हुए दमकल कर्मचारी भवीचंद शर्मा व रणवीर सिंह की दर्दनाक मौत हो गई थी। इन दोनों वीर कर्मचारियों के बलिदान को न्याय दिलाने तथा विभागीय समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर नपा कर्मचारी संघ हरियाणा एवं हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन के आह्वान पर 8 अप्रैल से प्रदेशभर में राज्य स्तरीय ऐतिहासिक हड़ताल लगातार जारी है। यूनियन ने चेतावनी दी है कि यदि मांगों का जल्द समाधान न किया गया तो आंदोलन तेज किया जाएगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी सरकार की होगी। इस दौरान राजेश बागड़ी, लीडिंग फायरमैन सुशील कुमार, राजेश मेहला, कश्मीरी लाल, प्रदीप गोदारा, रमेश कुमार, कुलदीप गुर्जर, साधु, संजय, दीपक कौशिक, सतीश कुमार, नरेंद्र जांगड़ा, नरेश कुमार, जसवीर व देवेंद्र लोहान आदि थे।

फायर कर्मियों की हड़ताल 11वें दिन भी रही जारी

बरवाला। अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन संबंधित सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित नगरपालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के आह्वान पर शुरू हुई हड़ताल 11 वें दिन भी जारी रही। बरवाला के दमकल केंद्र पर बरवाला के सभी कर्मचारी एक जुट हुए और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। इसकी अध्यक्षता प्रधान अजय कुमार ने की और मंच संचालन फायरमैन राजेश कुमार ने किया। नगरपालिका कर्मचारी संघ बरवाला इकाई के प्रधान सुनील कुमार लोट ने संबोधित करते हुए कहा कि आज फायर ब्रिगेड कर्मचारियों की हड़ताल 11 वे दिन भी जारी है। यदि अभी भी सरकार ने फायर कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान नहीं किया तो इस आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

प्लास्टिक दाना बनाने की फैक्ट्री में चोरी करने का दूसरा आरोपी धरा, नकदी बरामद

हरिभूमि न्यूज ⏭उकलाना

पुलिस ने उकलाना रोड स्थित प्लास्टिक दाना बनाने वाली फैक्ट्री में हुई चोरी की वारदात को सुलझाते हुए एक और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान सुरेवाला निवासी कुलदीप के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी के माल को बेचकर प्राप्त की गई राशि में से 500 रुपये बरामद किए हैं।

जांच अधिकारी सहायक उप निरीक्षक महेंद्र ने बताया कि इस संबंध में बिठमड़ा निवासी सोनू ने शिकायत दी थी। शिकायत के अनुसार उसकी सुरेवाला चौक से उकलाना रोड पर स्थित प्लास्टिक दाना फैक्ट्री में अशोक और कुलदीप उर्फ भज्जी कभी-कभी दिहाड़ी मजदूरी के लिए आते थे।

दिसंबर 2025 में इन दोनों ने मिलकर फैक्ट्री की दीवार फांदकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया और फैक्ट्री से पांच व तीन हॉर्सपावर की दो मोटर, 80 फुट भारी बिजली की तार व करीब 400 किलोग्राम कमानी (लोहा) चोरी कर लिया।

पुलिस ने इस मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी सुरेवाला निवासी अशोक उर्फ शौकी को पहले ही गिरफ्तार लिया था जो फिलहाल जेल में है। अब दूसरे आरोपी कुलदीप को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।

किसान, युवा और महिलाएं सब ठगे गए : जयप्रकाश

■ सांसद ने गेहूं खरीद व्यवस्था को बताया फेल, महिला आरक्षण लागू न करने पर उठाए सवाल

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में शनिवार शाम आयोजित प्रेस वार्ता में कांग्रेस सांसद जयप्रकाश (जेपी) ने केंद्र व प्रदेश सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि सरकार हर मोर्चे पर विफल साबित हो रही है, लेकिन किसानों के मुद्दे पर हालात बेहद चिंताजनक हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि गेहूं की खरीद व्यवस्था पूरी तरह चरमराई हुई है और किसानों को अपनी फसल बेचने में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा अपनाया गया ऑनलाइन सिस्टम और खरीद तंत्र फेल साबित हुआ है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सरकार के पास कोई ठोस योजना नहीं है। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि जब पर्याप्त गोदाम ही नहीं हैं, तो खरीद व्यवस्था कैसे सुचारू रूप से चल सकती है।

महिला आरक्षण के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण बिल 2023 पास होने के बावजूद लागू नहीं किया गया, जिससे सरकार की नीयत पर सवाल उठते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार महिलाओं को सिर्फ आश्वासन देकर गुमराह कर रही है। सरकार के वादों पर कटाक्ष करते हुए जयप्रकाश ने कहा कि न तो किसी के खाते में 15 लाख रुपये आए और न ही हर साल दो करोड़ युवाओं को रोजगार मिला। किसानों की आय दोगुनी करने का वादा भी अधूरा ही है। इस अवसर पंडित सुमन शर्मा व जयबीर सिहाग सहित काफी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद थे।

आरपीएस पब्लिक स्कूल में मेधावी छात्र सम्मानित

हांसी। आरपीएस पब्लिक स्कूल में शनिवार को सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। स्कूल प्राचार्या एकता सचदेवा ने बताया कि इस वर्ष कक्षा 10वीं की परीक्षा में 229 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें से 171 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। उन्होंने बताया कि 13 विद्यार्थियों ने 95 फीसद से अधिक, 67 विद्यार्थियों ने 90 फीसद से अधिक,146 विद्यार्थियों ने 80 फीसद से अधिक अंक तथा 219 विद्यार्थियों ने 60 फीसद से अधिक अंक प्राप्त किए हैं। उन्होंने बताया कि अंश ने 98 .2 फीसद अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम, सुंदर मलिक ने 97 .2 फीसद अंकों के साथ द्वितीय तथा मधुर राम व नैतिक ने तृतीय स्थान पर रहे। इस अवसर पर विद्यालय निदेशक डॉ. संदीप देशवाल ने सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं अध्यापकों को इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है।

एसडी मॉडर्न पब्लिक स्कूल में टापर्स का सम्मान

हांसी। एसडी मॉडर्न पब्लिक स्कूल में शनिवार को दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में उन विद्यार्थियों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया, जिन्होंने बोर्ड परीक्षा में 85 फीसद से अधिक अंक प्राप्त किए। समारोह के दौरान सभी मेधावी विद्यार्थियों को पटका पहनाकर तथा सम्मान-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति मैनेजर नकुल अग्रवाल, प्रधानाचार्या ऋतु सिंह सहित सभी विद्यार्थियों के अभिभावक मौजूद थे। विद्यालय प्रबंधन समिति मैनेजर नकुल अग्रवाल ने बताया कि कक्षा 11 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप टेस्ट में प्राप्त अंकों के आधार पर 80 फीसद से 84 .99 फीसद तक 30 फीसद, 85 फीसद से 89 .99 फीसद तक 40 फीसद, 90 फीसद से 94 .99 फीसद तक 50 फीसद तथा 95 फीसद से 100 फीसद तक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को ट्यूशन फीस में 100 फीसद तक छूट प्रदान की जाएगी।

फिजिक्सवाला के विद्यार्थियों का परिणाम शानदार

हिसार। शिक्षा कंपनी फिजिक्सवाला के विद्यार्थियों ने सीबीएसई कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षा 2026 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सफलता का परचम लहराया है। देशभर में जहां कई विद्यार्थियों ने शत-प्रतिशत अंक हासिल कर रिकॉर्ड बनाया, वहीं इसका उत्साह हिसार में भी देखने को मिला। इसी कड़ी में फिजिक्सवाला के तकनीक-सक्षम ऑफलाइन केंद्र 'विद्यापीठ' ने हिसार में सम्मान समारोह किया। इसमें शहर के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने बोर्ड परीक्षा में शानदार अंक प्राप्त कर शहर का नाम रोशन किया। प्रमुख रूप से गिरीश गर्ग (97 .80 फीसद), अंशिका (97 .80 फीसद) और सिद्धार्थ ओमर (97 .60 फीसद) को सम्मानित किया गया। फिजिक्सवाला के संस्थापक एवं सीईओ अलख पांडेय ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी।

बैठक चुनाव लड़ने के लिए आ रहे आवेदन, छंटनी करके करेंगे फाइनल

नगर पालिका चुनाव के लिए भाजपा पूरी तरह तैयार, बनाईं 15 समितियां : कृष्ण बेदी

हरिभूमि न्यूज ⏭उकलाना

हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्री एवं उकलाना नगरपालिका चुनाव प्रभारी कृष्ण बेदी ने कहा है कि भाजपा चुनाव के लिए पूरी तरह से तैयार है। चुनाव के लिए समितियां बनाकर कार्यकर्ताओं को उनके काम बारे समझा दिया गया है। मंत्री कृष्ण बेदी यहां चुनाव प्रबंधन बारे पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की बैठक ले रहे थे। बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि पालिका चुनाव के लिए 15 समितियां बनाई गई है, हमने उन समितियों की बैठक लेकर कार्यकर्ताओं को उनके काम भी समझा दिए हैं। उन्होंने बताया कि भाजपा के निशान पर चुनाव लड़ने के लिए कई आवेदन आए हैं, कुछ आज भी आए हैं। रविवार को शाम चार बजे चुनाव प्रबंधन समिति की बैठक है, जिसमें सारे नाम फाइनल हो जाएंगे। संभवतः 20 या 21 अप्रैल को सभी उम्मीदवारों की घोषणा हो जाएगा।

उकलाना। पत्रकारों से बातचीत करते मंत्री कृष्ण बेदी, साथ हैं अन्य नेता। फोटो: हरिभूमि

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कई वार्डों में एक से अधिक आवेदन भी आए हैं, ऐसे में हमें उनकी छंटनी भी करनी है। उकलाना नगरपालिका क्षेत्र में सामने आई समस्याओं बारे मंत्री ने बताया कि कुछ समस्याएं पता चली है लेकिन फिलहाल आचार संहिता के चलते कुछ भी करना संभव नहीं है। चुनाव के बाद प्राथमिकता के आधार पर सभी समस्याओं का निपटारा किया जाएगा।

बैठक में मंत्री के साथ जिला अध्यक्ष डॉ. आशा खेदड़, पूर्व मंत्री अनूप धानक, सुरेन्द्र आर्य, श्रीनिवास गोयल, कृष्ण सरसाना, रामफल नैन, मुनीष ऐलावादी, मीडिया प्रभारी राजेन्द्र सपड़ा, प्रवक्ता पीयूष मेहता, राजकुमार इंदौरा, अमर पातड़, चन्द्र प्रकाश बोस्ती, बहादुर सिंह नंगथला, सुरेश जांगड़ा, संदीप गोयल, सतपाल शर्मा, विनोद कुमार, अजय बेनीवाल व विनोद तोषावड़ सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद थे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 19 अप्रैल 2026

विशेषः पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल

केवल धरती पर ही जीवन संभव है, यह जानने के बावजूद जाने-अनजाने हम धरती को तरह-तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिक मानते हैं कि सौरमंडल के सबसे खूबसूरत ग्रह धरती को बचाना किसी एक सरकार या संगठन का काम नहीं, बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें जागरूक होना होगा, बदलाव के छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम अपनी प्यारी धरती को सुरक्षित रख पाएंगे।

हम सब मिलकर बचाएं अपनी प्यारी धरती

{ आवरण कथा / रजनी अरोड़ा }

धरती जीवन का आधार है, जो एक निःस्वार्थ मां की तरह मानव के लिए अनुकूल, सुंदर प्राकृतिक वातावरण ही प्रदान नहीं करती। उसकी मूलभूत जरूरतें (भोजन, पानी, हवा, वस्त्र, घर) भी मुहैया कराती है। विडंबना है कि मनुष्य अपने विकास और सुख-सुविधाएं पाने की अंधाधुंध दौड़ में जाने-अनजाने इसी धरती को सबसे अधिक नुकसान पहुंचा रहा है। दिनों-दिन बढ़ते मानव अतिक्रमण की वजह से जहां प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर कमी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं कई घरेलू-व्यावसायिक कार्य-कलाप वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन यानी कार्बन डाई-ऑक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का लेवल निरंतर बढ़ाने में जिम्मेदार हैं। नासा और इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की रिसर्च के अनुसार पिछले 150 वर्षों में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका असर केवल प्रकृति पर ही नहीं, बल्कि खेती, पानी, मानव स्वास्थ्य और जीव-जंतुओं के जीवन पर भी पड़ रहा है। इन संकटों से अपनी धरती को बचाने के लिए हम सभी को अपने स्तर पर हर संभव प्रयास करने होंगे।

पर्यावरण की करें सुरक्षा

धरती को बचाने के लिए सबसे जरूरी है पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना, अच्छी आदतें अपनाना, बच्चों और दूसरों को भी प्रेरित करना। परिवार में ग्रीन रूल बनाएं और उन्हें अमल करने के लिए सजग रहें। पर्यावरण नीतियों को लेकर सचेत रहें। अपने इलाके में हरित नीतियां (पेड़ लगाने, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक परिवहन सुधार) लागू करवाने की मांग करें। पर्यावरण संगठनों से जुड़ें।

घर को बनाएं ग्रीन होम

घर में ऊर्जा की खपत, कार्बन उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण है। ऊर्जा संरक्षण के लिए जब जरूरत न हो तो कमरे की लाइट, पंखे बंद कर दें। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब यूज न कर रहे हों तो स्विच ऑफ कर दें। स्टैंडबाय में भी बिजली खर्च होती है। दिन में प्राकृतिक रोशनी का अधिक उपयोग करें। साधारण बल्ब की तुलना में एलईडी बल्ब 75 प्रतिशत कम बिजली खर्च करता है और 10 गुना अधिक चलता है। यह छोटा बदलाव बिजली का बिल कम करता है और कार्बन उत्सर्जन भी। पुराने एसी, फ्रिज और वॉशिंग मशीन बहुत अधिक बिजली खर्च करते हैं। 5 स्टार रेटिंग वाले उपकरण खरीदें। इनसे 30-40 प्रतिशत बिजली बचती है। घर की छत पर सोलर पैनल लगवाना या किसी अक्षय ऊर्जा प्रदाता की मदद से बिजली लेना काफी कारगर है। यह वन-टाइम इंवेस्टमेंट है, जो आने वाले तकरीबन 25 साल तक मुफ्त बिजली देता है। सरकार इसमें सब्सिडी भी देती है। एसी को 24-25 डिग्री पर ही चलाएं। हर एक डिग्री कम करने पर 6 प्रतिशत अधिक बिजली खर्च होती है।

घर की एयर सीलिंग यानी दरवाजों और खिड़कियों की दरारें बंद करना, ऊर्जा बचत का सबसे किफायती तरीका है। इससे गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गर्माहट बनी रहती है और हीटिंग-कूलिंग का खर्च 15-30 प्रतिशत तक कम हो जाता है। घर में गैस या कोयले की जगह इलेक्ट्रिक हीट पंप लगाने से कार्बन फुटप्रिंट में 100 किलो कार्बन डाई-ऑक्साइड प्रति वर्ष की कमी आ सकती है। वॉशिंग मशीन हमेशा फुल लोड पर चलाएं। पानी का टेंपरेचर नॉर्मल रखें। पानी गर्म करने में एनर्जी की खपत 75-90 प्रतिशत बढ़ जाती है यानी बिजली का बिल बढ़ जाता है। इसी तरह कपड़े क्लॉथ-ड्रायर में सुखाने के बजाय बाहर धूप या खुली हवा में सुखाएं, क्योंकि वॉशिंग मशीन का क्लॉथ-ड्रायर घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे- फ्रिज, टीवी, डिशवॉशर, एसी, लैपटॉप से कहीं ज्यादा बिजली खर्च करता है।

भोजन ना करें वेस्ट

दुनिया के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 26 प्रतिशत भाग खाद्य उत्पादन का रहता है। इसलिए खाने को वेस्ट ना करें। दुनिया में उत्पादित खाने का एक-तिहाई हिस्सा बर्बाद होता है। यानी खाद्य पदार्थ उगाने में लगा पानी, बिजली और मेहनत, सब बेकार। ऐसे में जरूरत के अनुसार ही खाना बनाना चाहिए। अगर खाना बचता भी है तो उसे फेंकने के बजाय अगले मील में खा लें या जरूरतमंद को दे दें।

सिंगल-यूज प्लास्टिक है हार्मफुल

आज प्लास्टिक-प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर हो चुकी है। इससे बचने के लिए सिंगल-यूज प्लास्टिक की चीजों (पॉलिथीन, प्लास्टिक कप, स्ट्रॉ, बर्तन) का प्रयोग कम से कम करें। कपड़े का थैला, स्टील की बोतल और हर्बल टूथब्रश अपनाएं। पानी के लिए रियूज होने वाली बोतल का इस्तेमाल करें।

कार्यस्थल में रखें ध्यान

अपने कार्यस्थल पर भी छोटे-छोटे प्रयासों से धरती को संरक्षित करने में अपना सहयोग आप दे सकते हैं। एंवॉयर्नमेंट फ्रेंडली सामग्री, एलईडी लाइट, ऊर्जा बचाने वाले उपकरण और कचरे का उचित प्रबंधन वाले उपकरणों का यूज करें। कागज की जगह डिजिटल दस्तावेज उपयोग करें। प्रिंट करना जरूरी हो तो पेपर के दोनों तरफ प्रिंट करें। व्यावसायिक मुद्दों पर परिचर्चा करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग को बढ़ावा दें ताकि समय और ऊर्जा की बचत हो। ऑफिस जाने के लिए अकेले कार ड्राइव करके जाने के बजाय कारपूल की आदत डालें। यानी एक गाड़ी में 4 लोग जाएं तो कार्बन उत्सर्जन 75 प्रतिशत कम होता है। मेट्रो, बस, ट्रेन जैसे सार्वजनिक परिवहन में सफर करें। अगर नई गाड़ी खरीदनी हो तो इलेक्ट्रिक वाहन खरीदें। इसमें सब्सिडी भी मिलती है। इससे पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता तो कम होगी ही, प्रदूषण भी कम होगा। कम दूरी के लिए साइकिल या पैदल चलने की आदत डालें। पर्यावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी बेहतरीन है।

अधिक से अधिक पेड़ लगाएं

पेड़-पौधे धरती को खूबसूरत हरा-भरा ही नहीं बनाते, भूमि में कटाव कम कर मजबूती लाने, भूमि की उर्वरता बढ़ाने, पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखने में भी मदद करते हैं। हमें जीवनदायी ऑक्सीजन देते हैं और अपने जीवनकाल में तकरीबन 1 टन कार्बन डाई-ऑक्साइड सोखते हैं। आप अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी भी खास मौके पर पेड़-पौधे लगाने की परंपरा शुरू कर सकते हैं। कॉरपोरेट ट्री प्लांटेशन ड्राइव में शामिल होकर विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधे लगाकर ऑफिस कंपाउंड में हरियाली बढ़ाएं। हमारे ऐसे प्रयासों से भी धरती पर हरियाली बढ़ेगी। *

जल संरक्षण भी है जरूरी

जलवायु परिवर्तन से पानी का संकट भी धरती पर बढ़ता जा रहा है। दुनिया के कई देशों समेत भारत के कुछ राज्यों में भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। जल संरक्षण के लिए भी हम कुछ प्रयास कर सकते हैं। जैसे-ब्रश करते समय नल बंद रखना, कम समय में नहाना और टपकते नलों को ठीक करवाना। ऐसी छोटी-छोटी आदतें मिलकर हजारों लीटर पानी बचा सकते हैं। घर की छत पर वर्षा जल संग्रह प्रणाली लगाएं। यह पानी बगीचे, गाड़ी धोने और फ्लश के लिए उपयोग हो सकता है। बाजार में ऐसे नल उपलब्ध हैं, जो 50 प्रतिशत तक कम पानी उपयोग करते हैं लेकिन दबाव उतना ही रहता है। इससे पानी की बचत होती है। दुनिया के समुद्रों, नदियों में बेशुमार प्लास्टिक जमा हो चुका है। धरती पर मौजूद जल को संरक्षित करने के लिए हमें सजग होना होगा।

केवल एक दिन ही नहीं रोज मनाएं पृथ्वी दिवस

विगत कई दशकों से हम जाने या अंजाने अपनी धरती को नुकसान पहुंचाते आ रहे हैं। आज धरती के अस्तित्व पर ही संकट मंडराने लगा है। ऐसे में अब यह हमारी ही जिम्मेदारी है कि पृथ्वी संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करें। हर वर्ष मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, हम सबको यही संदेश देता है।

{ अवेयरनेस / लोकमित्र गौतम }

धरती हम सभी के जीवन का आधार है। लेकिन विडंबना देखिए कि हम सब धरतीवासी इसे ही सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे में हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, केवल एक तारीख भर नहीं है बल्कि समूचे मानव समुदाय को एक चेतावनी और सामूहिक संकल्प का प्रतीक भी है।

इस दिन की महत्ताः पृथ्वी दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास की अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों को ही नष्ट करते जा रहे हैं। बढ़ता प्रदूषण, घटते जंगल और दिनोंदिन डराता जलवायु परिवर्तन, ये सब संकेत हैं कि हमें अपनी सोच और पृथ्वी मां के साथ किए जाने वाले अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है। पृथ्वी दिवस हमें इस बात की भी प्रेरणा देता है कि हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां आसानी से निभ सकती हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित पृथ्वी, एक स्वच्छ वातावरण और संतुलित पर्यावरण मिल सके।

पृथ्वी दिवस की शुरुआतः पृथ्वी दिवस की शुरुआत पिछली सदी में 1970 में हुई थी। इसके पीछे उस समय की वैश्विक स्थितियां जिम्मेदार हैं। सन् 1960 के दशक में अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा था, लेकिन पर्यावरण संरक्षण पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा था। नदियां प्रदूषित हो रही थीं, हवा दिन पर दिन जहरीली हो रही थी और जैव-विविधता लगातार खतरे में थी। इसी सबको देखते हुए अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 22 अप्रैल 1970 को पृथ्वी दिवस का आयोजन किया। इस दिन करीब 2 करोड़ लोग सड़कों पर उतरे और पर्यावरण संरक्षण की मांग की। यह एक ऐतिहासिक जन-आंदोलन बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे यह विभिन्न वैश्विक अभियानों में बदल गया और आज दुनिया भर के 190 से ज्यादा देश पृथ्वी दिवस मनाते हैं।

अधिक प्रासंगिक है आजः पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता, इसके शुरू किए जाने के समय से कहीं ज्यादा आज है। हम जिन समस्याओं विशेषकर पर्यावरणीय समस्याओं का आज सामना कर रहे हैं, इससे पहले ये कभी इस कदर भयानक नहीं थीं। बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर आज जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण हैं। दिल्ली जैसे शहरों की हवा प्रदूषण के कारण इस कदर जहरीली है कि दुनिया के कई स्वास्थ्य संगठन कह चुके हैं कि दिल्ली में पूरी जिंदगी गुजारने का मतलब है, अपनी जिंदगी के 10 साल कम कर लेना। लगभग यही हाल जल संकट के मामले में भी है। किसी एक देश में नहीं बल्कि पूरी दुनिया आज जल संकट से गुजर रही है। अगर बात वनों के विनाश या जैव-विविधता के नुकसान की करें तो जितना कहें, वह कम होगा। तमाम चेतावनियों और वैज्ञानिक अध्ययनों से निकले निष्कर्षों के बावजूद हर साल दुनिया से लाखों हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है।

वैश्विक है संकटः पृथ्वी में हर तरीके के सकारात्मक वातावरण के क्षरण का यह संकट किसी एक देश का संकट नहीं है, दुनिया के हर हिस्से में यही हो रहा है। अपवाद के तौर पर अगर कुछ देश इस विनाश के हिस्सेदार नहीं हैं, तो दूसरों के कारण उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ रही है। जहां तक अपने देश भारत का सवाल है, तो हमारे यहां तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण पर्यावरण पर बहुत गहरा दबाव है। खेती में रासायनिक उर्वरकों की अधिकता और लगातार मिट्टी के अनुर्वरक होते जाने के कारण फसलों का खाद पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होते जाना, जहां चाहकर भी मृदा प्रदूषण से हम बच नहीं सकते, वहीं नदियों का प्रदूषण भी दिनोंदिन गहराता जा रहा है। हालांकि हाल के दिनों में हमारे देश में कई सकारात्मक पहलें भी देखने को मिली हैं। मसलन सौर ऊर्जा मिशन के बढ़ते कदम, प्लास्टिक प्रतिबंध के आधे-अधूरे ही सही पर लगातार बार-बार चलाए जाने वाले अभियान, किचन गार्डेनिंग और ऑर्गेनिक खेती के हो रहे प्रयास, ये दिखाते हैं कि अगर इच्छाशक्ति हो तो धरती को बर्बाद होने से हम सब सामूहिक प्रयासों से बचा सकते हैं।

छोटे कदम भी हैं महत्वपूर्णः पृथ्वी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब हर आदमी आगे बढ़कर इसके संरक्षण में अपना योगदान देगा। अगर हम लोग संकल्प ले लें कि रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे, पानी, बिजली की अंधाधुंध बर्बादी नहीं करेंगे, पेड़ लगाएंगे और लगे हुए पेड़ों की देखभाल करेंगे, तो इतना भर करने से ही पृथ्वी के सामने जो समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, इनमें से आधी खत्म हो जाएंगी और अगर सरकार, विभिन्न संस्थाएं और समाज इसके विरुद्ध उठ खड़ा हो तब तो तमाम परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। *

{ कविता / घमंडीलाल अग्रवाल }

मेरा गांव

मिट्टी में मुक्तक मिलते हैं
गालियों-गलियों गीत,
गाय-भैंस के रंभाने में
कविता और अगीत।
छप्पर ऊपर की खपरैलें
अर्पण करती लेख,
ठेढ़ी पगडंडियां खींचती
उपन्यास की रेख।
जन-जन की बोली उपजाती
मधुर हास्य की गंध,
पहनावों में पहेलियों के
कई संकलन बंद।
नूतन प्रेमकथा देने की
पनघट ने ली ठान,
शेर, गज़ल, गीतिका लुटाती
अधरों की मुस्कान।
यहां रहट की ध्वनियां देतीं
एकांकी के भाव,
लेखक, कथाकार, कवि, शायर
लोगो, मेरा गांव।

{ व्यंग्य / पूरन सरमा }

बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा।

त्याग दीजिए नैतिकता

हालांकि आप अब तक नैतिकता का त्याग कर ही चुके होंगे, लेकिन यदि नहीं किया है तो नेक सलाह मानकर इसे अविलंब त्यागिए। इसमें बंधे रहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। त्याग और बलिदान का युग नहीं है यह। यह युग घोर स्वार्थ-परकता, अन्याय, छल, कपट तथा प्रपंच का है। आपने थोड़ी-सी भी शालीनता बरती कि गए काम से। नैतिकता से आदमी में निष्ठा, लगन व मेहनत के भाव जन्म लेते हैं और ये भाव अब गिर चुके हैं। इन भावों को अपनाने से आदमी का पतन होता है तथा लोककल्याण की चक्की में पिसकर नष्ट हो जाता है। श्रद्धा, आदर्श, परोपकार एवं ईमानदारी जैसे शब्द अब महत्त्व खो चुके हैं। इनके अर्थ समझने की कोशिश मत करिए। वैसे तो शब्दकोषों के जो नए संस्करण आएंगे, उनमें आपको ये शब्द ही नहीं मिलेंगे। इसलिए नैतिकता को त्यागिए और स्वार्थ की अंधी दौड़ में शरीक हो जाइए, तब तो आपकी नैया इस भवसागर से पार हो जाएगी, अन्यथा इसी में डुबकी लगाते रहेंगे।

दफ्तर में जिस व्यक्ति के पास जरा-सी भी नैतिकता है, बस वही तकलीफ पा रहा है। वर्ना दूसरे तमाम लोग बाहर गुमटियों पर चाय-समोसे उड़ा रहे हैं, पान की पीकें उगल रहे हैं। आपने ही कौन-सा च्यवनप्राश खाया है, जो सारा कौशल दिखाकर पूरे दफ्तर के कार्य को निपटाना चाहते हैं। काम मत कीजिए, बस बात कीजिए। वेतन काम करने का नहीं, ऑफिस में हाजिरी लगाने का मिलता है, वह आप कर ही देते होंगे। काम करने के लिए घूस, रिश्वत तथा भेंट आदि का चलन है। भ्रष्टाचार किसलिए फैलाया गया है? बस इनका लाभ उठाइए। यह लाभ उठाने के लिए होता है, त्यागने के लिए नहीं। वेतन तो उन लोगों को भी यथासमय मिल रहा है, जो काम नहीं करते, फिर आपको कौन-सा हार्ड ड्यूटी एलाउंस मिल रहा है। यह आपकी नैतिकता ही तो है, जो आपको चैन नहीं लेने देती। नैतिकता बड़ी खराब है, जिसमें एक बार घुस जाए, निकलने का नाम ही नहीं लेती है। मेरी तमाम सज्जनों से अपील है कि वे आपनी सज्जनता को त्यागें। युग बड़ा खराब है, सब घात लगाए बैठे हैं। आपको गच्चा देने की फिराक में है दुनिया। दुर्जनता को अपनाइए, आपकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। समस्याओं के पहाड़ तैयार करने हैं तो सज्जन बने रहिए। यकीन न हो तो अभी आप सज्जनता के पक्ष में जनमत संग्रह करवाकर देखिए, आप अकेले रह जाएंगे। अगर यह सोचते होंगे कि यूनियन बना लेंगे, तो यह भी दिवास्वप्न है। वैसे यूनियनबाजी सज्जन आदमी कर भी नहीं सकता। इसके लिए भी आपको घाट-घाट का पानी पीने के बाद सज्जनता का पाजामा हर हालत में उतार कर फेंकना होगा। जो आदमी युग की नब्ज नहीं पहचानता, वह पछताता है। यदि आप पछताने का चाव रखते हैं तो जरूर, नैतिकता को अपनाए रहें। सज्जनता आपके भीतर होगी तो आप पब्लिक ट्रांसपोर्ट में कोई भी यात्रा आराम से नहीं कर सकेंगे। यात्रा के दौरान आपके पास जब भी कोई महिला आएगी तो खड़े होकर आप उसे बैठने को स्थान दे देंगे। अब आप खड़े रहिए, घंटे-दो घंटे। बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और किसी न किसी तरह आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप में शालीनता, विनम्रता और सदाशयता कूट-कूट कर जो भरी है, उसी का परिणाम है कि आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा। आपकी हिम्मत नहीं होगी कि आप उससे यह कह दें कि वे अपने पांव समेट लें। काश, इस समय आपके पास दुर्जनता होती, लफंगई होती तो आपको सीट मिल जाती। शिष्टाचार इस युग की घोर बुराई है। आप बुराई अपनाते हैं तो यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

मेरी तो यही सलाह है कि आप में जो भी उच्च संस्कार बतौर इंसानियत के पैदा हो गए हैं, उन्हें अपने वैयक्तिक जीवन के हित संरक्षण के लिए अविलंब त्याग दीजिए। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

चंडीदत्त रचना-समग्र

अपने छोटे से जीवन में ही चंडीदत्त शुक्ल ने पत्रकारिता के साथ साहित्य लेखन में भी अलग पहचान बना ली थी। उनकी उपलब्ध अठहत्तर कविताओं, कहानियों और साक्षात्कार का संकलन 'चंडीदत्त रचना समग्र' पुस्तक के रूप में हाल में प्रकाशित हुआ है। इन रचनाओं से गुजरते हुए उनकी साहित्य की गहरी समझ और नई दृष्टि से रचने की प्रतिभा प्रमाणित होती है। 'जब मन का हर डर मर जाए', 'हंसती खेलती औरत', 'सो जाओ कि रात बहुत गहरी है' जैसी अनेक कविताएं और 'फिर आना अखिलेश और हंसना जोर-जोर से..', 'एक आंसू गुनगुनाता रहा रात भर' जैसी कहानियां उनके क्रिएटिव रेंज की तस्दीक करती हैं। पुस्तक में संकलित साक्षात्कार में उन्होंने अपने आरंभिक जीवन और साहित्यिक सरोकार पर बेबाक विचार भी व्यक्त किए हैं। साहित्य से आम लोगों की बढ़ती दूरी के बारे में चंडीदत्त के यह विचार ध्यान देने योग्य हैं, 'इन दिनों बहुतेरा साहित्य अमूर्त भाषा और भाव के साथ लिखा जा रहा है, जिससे जुड़ पाना सामान्य पाठक के बस का नहीं है।' *

पुस्तकः चंडीदत्त रचना-समग्र, **संपादकः** डॉ. शैलेंद्र नाथ मिश्र-राजेश ओझा, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, नोएडा

{ लघुकथा / गोविंद भारद्वाज }

मजदूर

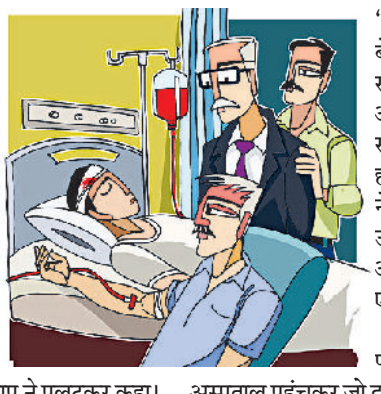

भाई साहब पिछले हफ्ते जिस लड़की को हम लोग देखने गए थे, उस लड़की का सिविल सेवा में चयन हो गया है। अब तो रिश्ता पक्का कर दीजिए।' गोपी बाबू के छोटे भाई ने कहा।

'नहीं छोटे, वह लड़की हमारे घर की कभी बहू नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने कहा।

'क्यों भैया क्या दोष है उस बच्ची में?' छोटे ने पूछा। 'दोष उसमें नहीं उसके पिताजी में है।' गोपी बापू ने पलटकर कहा। 'कौन सा दोष.. कैसा दोष भैया?' 'उसके पिताजी हमारे ही कारखाने में मजदूर हैं।' नथुने फुलाते हुए गोपी बापू ने कहा। इस पर छोटे ने कहा, 'यह तो अच्छी बात है। मेहनती बाप की मेहनती बेटी अपने घर की बहू बनेगी।' छोटे भाई ने समझाया। 'नहीं छोटे, हम अपने मजदूर को अपने बराबर नहीं बैठा सकते। उसको अपना समधी नहीं बना सकते। उसके पसीने की बदबू हमारे बदन का इत्र नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने दलील दी। उसी समय मोबाइल की घंटी बजी। उधर से आवाज आई, 'हैलो गोपी बाबू, सिटी अस्पताल आ जाइए तुरंत। आपके बेटे का एक्सीडेंट हो गया है।'

'अरे..अभी आया।' गोपी बापू ने माथे का पसीना पोंछा फिर घबराते हुए अस्पताल भागे। अस्पताल पहुंचकर जो दृश्य गोपी ने देखा, उसे देखते रह गए। दरअसल, वही मजदूर उनके लड़के को अपना खून दे रहा था, जिसको वे अपने बराबर बैठाना नहीं चाहते थे। *

हो सकता है आपने कुछ नेशनल पार्क और वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी की यात्रा की हो। लेकिन अगर आप दुनिया के सबसे अनूठे नेशनल पार्क का अनुभव लेना चाहते हैं तो आपको मणिपुर स्थित तैरते हुए नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ की यात्रा करनी होगी। इस अनोखे नेशनल पार्क की विशेषताओं के बारे में जानिए।

दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ
नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ

टूरिस्ट प्लेस
समीर चौधरी

मणिपुर की लोकटक झील के दक्षिण हिस्से में कीबुल लामजाओ नेशनल पार्क यानी राष्ट्रीय उद्यान है, जोकि दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क है। मणिपुर के विष्णुपुर जिले में, इंफाल से लगभग 50 किमी. की दूरी पर यह पार्क 40 वर्ग किमी. में फैला हुआ है और यह लुप्तप्राय संगाई हिरण (नृत्य करने वाला हिरण) का अकेला प्राकृतिक घर है। यह उद्यान न केवल पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था (मत्स्य पालन, जल विद्युत) के लिए भी मायने रखता है।

जैव-विविधता से भरपूरः कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जैवविविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह अपनी विशिष्ट तैरती फुमदिस और यहां खास तौर से पाए जाने वाले संगाई हिरण के लिए भी विख्यात है। फुमदिस सड़ी-गली वनस्पतियों, मिट्टी और जड़ों का तैरता हुआ समूह होता है। यह झील के पानी के ऊपर तैरता रहता है, जिसमें 450 से अधिक जलीय वनस्पतियों की प्रजातियां, जंगली सूअर, हॉग हिरण, बड़ी भारतीय सिवेट जैसे जीव पाए जाते हैं। नवंबर से मार्च के बीच इस पार्क में प्रवासी पक्षी भी आते हैं, इसलिए यात्रा करने का यही सबसे अच्छा समय माना जाता है।

अपने-आप में अनूठा राष्ट्रीय उद्यानः कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, एक ऐसी जगह है, जहां प्रकृति ने अपने नियम नए सिरे से लिखे हैं, जिसकी वजह से नाजुक, तैरता हुआ एक अजूबा भूखंड बन गया है। इस अलौकिक लैंडस्केप में मणिपुर का नृत्य करने वाला संगाई हिरण घूमता हुआ दिखता है, जिसके तेज गति से दौड़ते कदम, तैरते घास के मैदान पर बहुत आकर्षक लगते हैं। एक जमाना था जब यह माना जाने लगा था कि संगाई हिरण विलुप्त हो गया है। ऐसे में यहां उनके बचे रहने की संभावना ने नई उम्मीद को जगाया है, दरअसल, अनोखी प्राकृतिक संरचना फुमदिस की स्थिरता का यहां के जीवों के लिए बहुत महत्व है। न सिर्फ हिरण के लिए बल्कि उस पूरे ईकोसिस्टम के लिए भी, जो पृथ्वी पर कहीं और है ही नहीं।

बढ़ रही नाचते हिरण की संख्याः सन् 1954 तक यह मान लिया गया था कि संगाई हिरण की प्रजाति लुप्त हो गई है। संगाई तैरते फुमदिस के अतिरिक्त कहीं भी जीवित नहीं रह सकता है। इसकी वजह शिकार और फुमदिस का खत्म होना माना गया। इसके लगभग दो दशक बाद सन् 1974-75 के बीच किए गए हवाई सर्वे के दौरान उम्मीद की किरण जागी। कीबुल लामजाओ के तैरते फुमदिस में लगभग 14 संगाई देखे गए, जिसकी वजह से इनके संरक्षण प्रयासों में नया जोश आया और सन् 1995 तक इनकी संख्या बढ़कर 155 हो गई, जो सन् 2016 में 260 तक पहुंच गई। तैरते फुमदिस पर संगाई की नजाकत भरी चाल ने ही इसे 'नाचते हिरण' का नाम दिया है।

इसलिए मिला राष्ट्रीय उद्यान का दर्जाः संगाई की खोज के बाद ही भारत सरकार और मणिपुर की सरकार ने वन्यजीवन संरक्षण कानून 1972 के तहत 1977 में कीबुल लामजाओ को 'राष्ट्रीय उद्यान' (नेशनल पार्क) घोषित किया। संगाई हिरण और उसके प्राकृतिक आवास स्थल यानी फुमदिस के लिए यह कानूनी सुरक्षा जरूरी थी। संगाई केवल एक प्रजाति नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जड़ों वाला पशु है, जिसने हजारों वर्षों के दौरान तैरते फुमदिस पर रहने के लिए खुद को ढाल लिया है और यह लैंडस्केप व मणिपुर के लोगों के बीच गहरे संबंध को प्रतिबिंबित करता है।

मौजूद हैं कई चुनौतियांः इस अनोखे राष्ट्रीय उद्यान के समक्ष कई इकोलॉजिकल चुनौतियां हैं। लोकटक हाइड्रोइलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट कृत्रिम रूप से पानी के स्तर को नियंत्रित करता है, जिससे फुमदिस चक्र बाधित होता है और यहां के तैरते हुए ईकोसिस्टम की स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। गौरतलब है कि कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान को परिभाषित करने वाला फीचर उसका तैरता इकोसिस्टम ही है, जो संगाई को जीवित रखने के लिए आवश्यक है। एक ताजा अध्ययन में मणिपुर के इस आइकॉनिक हिरण के भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएं व्यक्त की गई हैं। क्लाइमेट चेंज की वजह से 2070 तक फुमदिस सिकुड़ जाएगा और जब फुमदिस नहीं होगा, तो संगाई का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। *

फुमदिस से जुड़े दिलचस्प तथ्य

फुमदिस वनस्पति, मिट्टी आदि की तैरती हुई मोटी परत होती है, जोकि जलीय पौधों और अन्य चीजों से मिलकर हजारों वर्षों में तैयार होती है। यह संगाई एवं अन्य वन्यजीवों को चरने की जगह, प्रजनन स्थल और आवास प्रदान करती है। दिलचस्प यह है कि फुमदिस प्राकृतिक जल चक्र है यानी यह झील के तले तक डूब जाती है पौष्टिक तत्व जज्ब करने के लिए। फिर कुछ समय बाद ऊपर उठ जाती है। यह चक्र उसके बने रहने के लिए आवश्यक है। फुमदिस केवल वनस्पति का टुकड़ा नहीं है बल्कि जीवित स्ट्रक्चर है। यह एक मोटी परत होती है, जिस पर बड़े जानवर भी रहते हैं। इस पर जो घास उगती है वह पूरे साल यहां निवास करने वाले वन्य जीवों को आवश्यक पौष्टिक तत्व प्रदान करती है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट
शिखर चंद जैन

कई बार लोग प्रतिभावान और क्षमतावान होते हुए भी एक सीमित दायरे से बाहर निकलकर कुछ बड़ा अचीव नहीं कर पाते। अगर लाइफ में कुछ बड़ा हासिल करना है तो अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे एक्सप्लोर करना जरूरी है। यह कैसे होगा, बता रहे हैं आपको।

अपनी छिपी स्ट्रेंथ को ऐसे करें एक्सप्लोर

हम अकसर अपने आपको एक मानसिक दायरे में बंद कर लेते हैं और फिर कुएं के मेंढक की तरह उस दायरे से बाहर निकलने की कोशिश ही नहीं करते। स्वयं द्वारा निर्मित अपनी मानसिक शारीरिक सीमाओं को अपनी वास्तविकता मान लेते हैं, जबकि वे केवल हमारे विचारों की उपज होती हैं। ऐसे में हम आगे नहीं बढ़ पाते। आगे बढ़ने और तरक्की करने के लिए जरूरी है अपनी क्षमता को एक्सप्लोर करना। इसका अर्थ है, अपने डर के पार जाना। जब आप स्वयं पर लगे 'लेबल' हटा देते हैं, तो आप पाते हैं कि आप उससे कहीं अधिक हैं, जितना आपने कभी सोचा था।

हमारे भीतर है असीमित क्षमताः हम अपनी क्षमताओं का केवल 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल करते हैं। यह आपने अकसर पढ़ा या सुना होगा। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि बाकी 90 प्रतिशत क्षमता का क्या होता है? वह बिना उपयोग के ही व्यर्थ के कामों में जाया हो जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इंसानी दिमाग की क्षमता का कोई अंत नहीं है। कैरोल ड्वेक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'माइंडसेट' में बताती हैं, 'ग्रोथ माइंडसेट' के साथ, हम अपनी क्षमता को असीमित रूप से विकसित कर सकते हैं। जब हम यह मानते हैं कि हमारी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा को मेहनत और सीखने के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, तो हम अपनी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ सकते हैं।' अब्राहम मैस्लो, जो मानवतावादी मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं, का मानना था कि हर इंसान में आत्म-वास्तविकीकरण की क्षमता होती है। यह वह अवस्था है, जहां हम अपनी पूरी क्षमता को पहचानते हैं और उसे हासिल करते हैं। उनके अनुसार, यह हम सभी की अंतर्निहित इच्छा होती है कि हम वह बनें, जो हम बनने के लिए सक्षम हैं।

लोगों का साथ लेंः हमारी क्षमता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। आधुनिक समाजशास्त्र के प्रमुख संस्थापकों में से एक एमिल दुर्खीम का मत है कि कि हम सामाजिक संबंधों और सहयोग के माध्यम से अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। हमारे आस-पास के लोग, हमारी संस्कृति और हमारा सामाजिक माहौल हमारी क्षमताओं को आकार दे सकते हैं। दूसरों की मदद लेने से ही नहीं, उनकी मदद करने से भी हमारी क्षमताएं बढ़ती हैं। प्रमुख समाजशास्त्री मैक्स वेबर का मानना था कि अनुशासित और केंद्रित मेहनत, जो कि एक सामाजिक गुण भी है, से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं।

कैसे करें अपनी क्षमता को एक्सप्लोरः अपनी असीमित क्षमता को एक्सप्लोर करने के लिए सबसे पहले, यह विश्वास करें कि आप में कुछ भी हासिल करने की क्षमता है। कभी भी नई चीजें सीखना न छोड़ें। नई किताबें पढ़ें और निरंतर नए अनुभव प्राप्त करें। कभी भी हार न मानें। अपनी असफलताओं से सीखें और आगे बढ़ें।

दिमाग के लचीलेपन का इस्तेमाल करें: जीनियस पैदा नहीं होते, गहन अभ्यास से जीनियस बनते हैं। प्रतिभा विकसित की जा सकती है। हमारा दिमाग लचीला होता है। इसका नियमित उपयोग और दिमागी मशक्कत करने से इसकी क्षमता निरंतर बढ़ती है। इस संबंध में जिम क्विक अपनी बेस्ट सेलर पुस्तक 'लिमिटलेस' में लिखते हैं, 'अपने दिमाग को अपग्रेड करें, कुछ भी तेजी से सीखें और अपने असाधारण जीवन को अनलॉक करें।' उनका कहना है कि हम अपनी सोच (माइंडसेट), प्रेरणा (मोटिवेशन) और तरीकों (मेथड्स) में बदलाव करके अपनी दिमागी क्षमताओं को असीमित कर सकते हैं, जिसमें सीमाओं को चुनौती देना, नींद को प्राथमिकता देना और लगातार अभ्यास करना शामिल है, ताकि हम तेजी से सीख सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। मैं यह नहीं कर सकता, जैसे विचारों को 'मैं यह सीख सकता हूं' में बदलें। अपनी बुद्धि को स्थिर न मानें, यह बढ़ सकती है। *

अक्षय तृतीया विशेष

हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है अक्षय तृतीया का पर्व। मान्यता है कि इस दिन किए जाने वाले शुभ कार्यों का अक्षय फल मिलता है। इस पर्व की महत्ता, इससे जुड़ी परंपराओं और मान्यताओं पर एक दृष्टि।

शुभ कार्यों का अक्षय फल प्रदान करती अक्षय तृतीया

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

भारतीय पंचांग में कुछ तिथियां पूरे जीवन-दर्शन को अपने भीतर समेटे रहती हैं। अक्षय तृतीया ऐसी ही एक विशिष्ट तिथि है, जो अक्षयता यानी कभी न समाप्त होने वाली ऊर्जा, पुण्य और समृद्धि का प्रतीक बनकर उभरती है।

धार्मिक-पौराणिक मान्यताएंः अक्षय तृतीया की तिथि का धार्मिक और पौराणिक आधार भी इसे विशेष बनाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान विष्णु के अवतार श्री परशुराम जी का जन्म हुआ था, जो धर्म और न्याय की स्थापना के प्रतीक माने जाते हैं। यह भी मान्यता है कि इसी दिन वेदव्यास ने महाभारत की रचना आरंभ की थी, जो भारतीय सभ्यता के नैतिक और दार्शनिक आधारों को समझने का सबसे बड़ा ग्रंथ है और इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा द्वारा सच्चे भाव से दिए गए एक छोटे से दान के बदले उन्हें दो 'लोक' प्रदान कर दिए थे। इन सभी कथाओं का सार यही है कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म कभी नष्ट नहीं होता।

सिखाती है जीने का संतुलित तरीकाः भारतीय संस्कृति में यह विचार बहुत गहराई तक समाया हुआ है कि संसार की हर भौतिक वस्तु नश्वर है। लेकिन सत्कर्म, करुणा और धर्म के फल अक्षय होते हैं। अक्षय तृतीया इसी शाश्वत सत्य का उत्सव है। यह तिथि हमें याद दिलाती है कि जीवन में किए गए अच्छे कर्म, दान, सद्भाव कभी व्यर्थ नहीं जाते, वे किसी न किसी रूप में अक्षय बने रहते हैं। यह हमें केवल पूजा-पाठ की संस्कृति ही नहीं सिखाती बल्कि जीवन जीने का एक संतुलित और संवेदनशील तरीका भी सिखाती है।

कृतज्ञता व्यक्त करने का दिनः अक्षय तृतीया पर्व जिस समय मनाया जाता है, वह रबी की फसल के पकने का समय होता है। खेतों में सुनहरी बालियां लहलहा रही होती हैं और किसान अपनी नई फसल को भगवान को अर्पित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन और सम्मान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में देखा गया है और अक्षय तृतीया, प्रकृति के उस मातृत्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक महत्वः अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदने की परंपरा केवल भौतिक समृद्धि का प्रतीक नहीं है बल्कि इस विश्वास का प्रतीक भी है कि आज किया गया निवेश भविष्य में स्थाई फल देगा। नए कार्यों की शुरुआत, गृह प्रवेश और विवाह आदि के लिए इस दिन को अत्यंत शुभ माना जाता है। विशेष बात यह है कि इस दिन किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पूरा दिन ही शुभ-मुहूर्त वाला होता है।

दान-पुण्य और सेवा का संदेशः अक्षय तृतीया का महत्व केवल सोने-चांदी, आभूषणों या अन्य भौतिक वस्तुओं की खरीदारी तक ही सीमित नहीं है। इस दिन अन्न, जल, वस्त्र और कलश के दान करने की भी प्रथा है। गर्मी के मौसम में जरूरतमंदों को पानी पिलाना, भूखों को भोजन कराना, इस दिन ये सभी कार्य अत्यंत पुण्यदायी माने जाते हैं। ये परंपराएं हमें सिखाती हैं कि समाज में समृद्धि तभी अक्षय हो सकती है, जब हर किसी का उसमें हिस्सा हो। अक्षय तृतीया इसी सांस्कृतिक दर्शन के संतुलन का नाम है, जो बताती है कि सिर्फ भौतिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक विकास भी उतना ही जरूरी है।

शुभ कर्मों से मिलता है अक्षय फलः अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति की उस गहरी परंपरा से नाता रखती है, जहां धर्म, अर्थ, प्रकृति और समाज, चारों का सुंदर समन्वय होता है। यह तिथि हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारे कर्म सही दिशा में हैं, तो उनका फल कभी समाप्त नहीं होगा। वास्तव में यही अक्षयता का वास्तविक दर्शन है। एक ऐसा जीवन, जिसमें अच्छाई निरंतर प्रवाहित होती रहे। इस प्रकार देखें तो अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं बल्कि प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा का मूल है, जो हमें सिखाती है- जो भी शुभ करो, वह सदा के लिए अक्षय हो जाता है। *

प्रवृत्ति
शाहिद ए. चौधरी

ज्ञान-संस्कृति-विचारों की
नई खिड़की खोलती हैं किताबें

भले ही पढ़ने और लिखने की नई-नई तकनीकें विकसित हो चुकी हैं, लेकिन किताबें हाथ में लेकर पढ़ने का सुख अनोखा होता है। पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने और कॉपीराइट के प्रति जागरूक करने के लिए ही **23 अप्रैल को विश्व पुस्तक, कॉपीराइट दिवस** मनाते हैं। इस दिवस की महत्ता पर एक नजर।

किताबें खिड़की की तरह होती हैं, जिसमें से दिखाई देता है एक नया संसार। हर नए पृष्ठ के साथ किताबें परिचित कराती हैं- नए लोगों से, नई संस्कृतियों से और नए विचारों से। गांधीजी ने कहा था, 'विचारों के युद्ध में पुस्तक ही शस्त्र है।' शायद यही वजह है कि ई-बुक्स के इस दौर में भी अनेक लोगों को अच्छे कागज पर छपी, जिल्द में बंधी, किताब अपने हाथों में लेकर पढ़ना ही अच्छा लगता है। हालांकि ऐसे लोगों को शायद आज परंपरागत मूल्यों में यथास्थिति का पक्षधर माना जा सकता है। लेकिन इससे पुस्तकप्रेमियों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि किताबें पढ़ने की उनकी आदत जो बन गई है।

नई पीढ़ी हो रही किताबों से दूर

पढ़ने की प्रवृत्ति को लेकर एक पक्ष यह है कि रील्स और वीडियोज की आधुनिक चकाचौंध में गुम आज की पीढ़ी तो टेक्स्ट बुक्स की तुलना में नेट के वीडियो लेक्चर्स को वरीयता देती है। यह पीढ़ी किताब पढ़ने की बजाय ऑडियो-बुक्स को सुनना पसंद करती है। क्या पढ़ने और सुनने में समान एकाग्रता बनी रहती है और बराबर का ज्ञान मिलता है? इस पर बहस हो सकती है। बहरहाल, युवा पीढ़ी किताबों से जिस अंदाज से दूर हो रही है या उसे बंद कर रही है या उसे खोलना ही नहीं चाहती है, उस पर शम्स तबरेज का यह शेर याद आता है-

अजीब किस्म की उभरी थी शक्ल लफ्जों से
किताब बंद न करता तो डर गया होता।

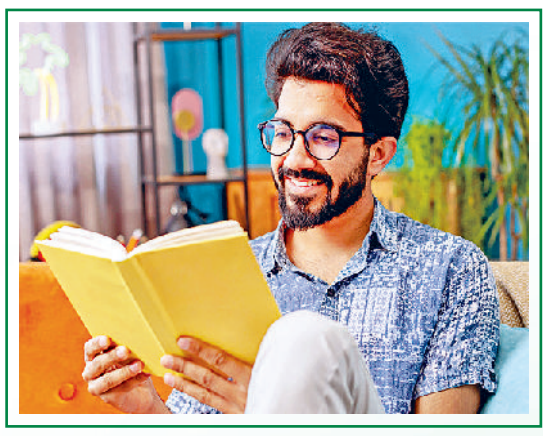

इसलिए मनाते हैं विश्व पुस्तक दिवस

किताबों से बढ़ती दूरी की पृष्ठभूमि में यूनेस्को की कोशिश है कि लोग किताबों को खोलें, उन्हें पढ़ें, उनमें अपनी दिलचस्पी बढ़ाएं और ज्ञानी बनें, क्योंकि किताबों से बढ़कर कोई पक्का दोस्त नहीं होता। किताबें पीढ़ियों के बीच में और संस्कृतियों के बीच में पुल का काम करती हैं। इसी तथ्य को मान्यता प्रदान करने के लिए यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ हर साल 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाता है।

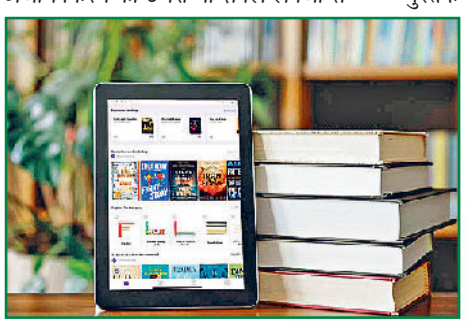

इस वर्ष के लिए चयनित पुस्तक राजधानी

हर साल इस जश्न को मनाने के लिए यूनेस्को व पुस्तक उद्योग के मुख्य सेक्टर्स- प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर विश्व पुस्तक राजधानी का चयन करते हैं। चुना हुआ शहर सभी आयु वर्गों और सभी समाजों में किताबों और पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है, न सिर्फ मेजबान देश में बल्कि पूरे विश्व में। यूनेस्को ने अब तक 26 विश्व पुस्तक राजधानियां घोषित की हैं, जिनकी शुरुआत 2001 में मेड्रिड (स्पेन) से हुई थी। इस वर्ष 2026 की पुस्तक राजधानी रबात (मराकश) को चुना गया है। रबात में मेन फोकस, संस्कृतियों को जोड़ने में पुस्तकों की भूमिका पर होगा। इसके अलावा इस वर्ष पुस्तक दिवस का फोकस पढ़ने के साथ साक्षरता पर भी है, जिसमें पढ़ने के घंटे को भी प्राथमिकता दी गई है। आमतौर से शाम को 7 से 8 बजे तक का समय किताब पढ़ने के लिए मुफीद माना जाता है। यानी रोजाना कम से कम एक घंटा किताब पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित की जाए, इस पर फोकस किया जा रहा है।

नई चुनौतियां भी कम नहीं

इसके अतिरिक्त इस बात पर भी गंभीर चर्चा हो रही है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की लेखकों के लिए प्रकाशन और कॉपीराइट सुरक्षा में क्या भूमिका होनी चाहिए? यह गंभीर विषय है और पेचीदा भी। एआई कॉपीराइट की परवाह किए बिना किसी के भी कार्य को सार्वजनिक करने की क्षमता रखती है, जिससे लेखकों व प्रकाशकों को नुकसान की आशंका रहती है। लेकिन एआई को नियंत्रित करना भी आसान नहीं है। फिर भी कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा। *

कॉपीराइट सुरक्षा पर भी केंद्रित है यह दिवस

इस दिवस को मनाने का उद्देश्य कॉपीराइट सुरक्षा को भी प्रोत्साहित करना होता है, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है। भारत में कॉपीराइट सुरक्षा 1957 के कॉपीराइट कानून से संचालित होती है, जिसके तहत स्वतः ही मूल साहित्य, नाटक, संगीत, सिनेमेटोग्राफ फिल्म्स/साउंड रिकॉर्डिंग्स सुरक्षित हो जाती हैं। सुरक्षा के लिए पंजीकरण आवश्यक नहीं है, लेकिन विवाद की स्थिति में प्रथम दृष्टया इसे साक्ष्य माना जाता है। कॉपीराइट सुरक्षा आमतौर से लेखक के जीवनकाल और उसके बाद अतिरिक्त 60 वर्षों तक लागू रहती है। यह 60 साल लेखक की मृत्यु के दिन से गिने जाते हैं। कानूनी साक्ष्य के लिए पंजीकरण करा लेना चाहिए, भले ही वह वैकल्पिक हो। इसके लिए कॉपीराइट ऑफिस में अप्लाई करना होता है। फोटोग्राफ, फिल्म, साउंड रिकॉर्डिंग, अज्ञात व सरकारी कार्य का कॉपीराइट प्रकाशन के बाद 60 वर्षों तक रहता है। इस दौरान लेखक को एक्सक्लूसिव अधिकार होता है, अपने कार्य के पुनः प्रकाशन, कापियां जारी करने, परफॉर्म करने, अनुवाद करने या एडॉप्ट करने का। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में दोनों दीवानी (मुआवजा), आपराधिक सजा (6 माह से 3 वर्ष की कैद और जुर्माना) का प्रावधान है। सेक्शन 52 के तहत कॉपीराइट उल्लंघन के अपवाद हैं जैसे निजी प्रयोग, शोध, आलोचना, समीक्षा या रिपोर्टिंग।